गांव और शहर

यह पुस्तक दिल्ली-प्रशासन द्वारा दूसरी श्रेणी के लिए समाज-शिक्षा की पाठ्य पुस्तक के रूप में स्वीकार की गई है। इसका स्वीकृत मूल्य ८८ पै० है। इस मूल्य से अधिक लेना उस समझौते के विरुद्ध होगा जो कि प्रकाशक तथा भारत के राष्ट्रपति के मध्य हुआ है।

गाँव और शहर

लेखक

संतराम वत्स्य

प्रकाशक

इंडियन पब्लिशिंग हाउस

नई सड़क, दिल्ली

सर्वाधिकार सुरक्षित

इंडियन पब्लिशिंग हाउस,
नई सड़क, दिल्ली

प्रथम संस्करण
जुलाई, १९६०
द्वितीय संस्करण
अप्रैल, १९६१
तृतीय संस्करण
जनवरी, १९६३
पुनरावृत्ति अक्तूबर, १९६३
चतुर्थ संस्करण
मार्च, १९६४
पुनरावृत्ति जुलाई, १९६४
,, फरवरी, १९६४

मूल्य
८८ पै०

मुद्रक :
पुरी प्रिण्टर्स, करोल बाग,
नई दिल्ली-५

विषय-सूची

तुम जानते हो

[पहली कक्षा के पाठ्य-क्रम का दोहराना]

भाग एक

घर और पानी

१—हमारा घर ६
२—कल पानी बन्द रहेगा १६

भाग दो

गाँव की सैर

१—गाँव की ओर २८
२—अशोक और कमला रामू किसान से मिले ३५
३—आओ, फुलवाड़ी लगायें ४८

भाग तीन

समाज-सेवक

१—ये हमारी सहायता करते हैं ५७
२—हमारी जरूरतें ६६
३—यह चिट्ठी कहाँ से आई है ? ८०
४—बाल-सभा ८६

भाग चार

यात्रा

१—मुझे जल्दी पहुँचना है ९२
२—सावधान ! यह सड़क है १००

भाग पाँच

हम अपने गाँव और शहर के बारे में क्या जानते हैं

(क) गाँव और शहर १०८
(ख) हजारों साल पहले ११३
(ग) गाँव और शहर : एक-दूसरे के सहारे ११७

तुम जानते हो

पहली कक्षा के पाठ्यक्रम का दोहराना

हम घर में रहते हैं। घर

गरमी, सर्दी और बरसात से हमारी रक्षा करता है। अपने घर में हम चोरों और जंगली जानवरों से भी बचे रहते हैं। घर में हमारे काम और आराम की सभी चीजें होती हैं। हम अपने घर में खुश रहते हैं।

घर में कई लोग रहते हैं। माता-पिता, भाई-बहिन तथा कुछ दूसरे सम्बन्धी। यह एक परिवार हुआ। एक परिवार के लोग

एक जगह रहते हैं। वे सब घर का कोई-न-कोई

काम करते हैं। कोई घर में काम करता है तो कोई बाहर से कमाकर लाता है। एक परिवार के लोग दुःख-सुख में एक-दूसरे के काम आते हैं।

घर में हमें रोज कई चीजों का जरूरत पड़ती है। वे सारी चीजें हम अपने हाथ से तैयार नहीं कर सकते। उनमें बहुत-सी दूसरों की बनाई हुई होती हैं। हमें अपनी जरूरत की चीजों के लिए दूसरों की मदद लेनी पड़ती है।

आज से हजारों साल पहले यह बात नहीं थी। लोगों की जरूरतें बहुत कम थीं। लोग नंगे घूमते थे। जंगल के फल और जानवरों का कच्चा मांस खाकर गुजारा करते थे। वे घर बनाना भी नहीं जानते थे। धीरे-धीरे उन्होंने आग जलाना सीख लिया। फिर वे मांस को पकाकर खाने लगे। पत्तों से तन ढकने लगे। उन्होंने खेती करना भी सीख लिया। फिर

वे झोंपड़ियों में रहने और पशुओं को पालने लगे। वे पशुओं पर बोझा लादते थे। उनसे खेती का काम लेते थे। उनका दूध पीते थे। और मांस खाते थे। वे अपनी जरूरतें खुद पूरी कर लेते थे। धीरे-धीरे उनकी जरूरतें दिनोंदिन बढ़ती गईं।

आजकल हमें अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए कई लोगों का सहारा लेना पड़ता है। किसान हमारे लिए अनाज, सब्जियाँ और कपास उगाता है। जुलाहा कपड़ा बुनता है। ग्वाला दूध देता है। लुहार

और बढ़ई औजार और मकान बनाते हैं। धोबी कपड़े धोता है। भंगी सफाई करता है। कुम्हार बर्तन बनाता है।

हमें किसी-न-किसी रूप में रोज दूसरों की मदद की जरूरत पड़ती है। इन सबके बिना हमारा काम नहीं चल सकता। एक परिवार के लोग जैसे एक-दूसरे के सहारे से अपना जीवन चलाते हैं, वैसे ही समाज के दूसरे लोग भी हमारे बहुत बड़े परिवार की तरह ही हैं। इनके बिना भी तो हमारा काम नहीं चलता। अलग-अलग काम करनेवाले बहुत-से लोगों को समाज कहते हैं।

तुम स्कूल में पढ़ते हो। तुम्हारे स्कूल के साथी भी तुम्हारे भाई-बहिनों की तरह ही हैं। तुम एक साथ पढ़ते हो और खेलते हो। एक दूसरे की सहायता करते हो। अध्यापक तुम्हें पढ़ाते हैं। नई-नई बातें सिखाते हैं। वे माता-

पिता की तरह तुम्हारा ध्यान रखते हैं। स्कूल भी तुम्हारा घर ही है। उसे बड़ा घर कहना ठीक होगा। अच्छे बच्चे घर की तरह ही स्कूल से भी प्यार करते हैं।

आदमी ही नहीं, बहुत-से जानवर भी हमारी सहायता करते हैं। घोड़ा ताँगे को खींचता है। बैल गाड़ी को खींचते हैं। गाय-भैंसें दूध देती हैं। बैल हल जोतने, रहट से पानी खींचने और अनाज गहाने का काम करते हैं। कुत्ता घर की रखवाली करता है।

भेड़-बकरियाँ और ऊँट भी हमारे काम के जानवर हैं।

ये जानवर हमारी तरह बोल नहीं सकते। पर वे बहुत-सी बातें समझते हैं। हमें उनके आराम का ख्याल रखना चाहिए।

उन्हें समय पर खाना-पीना देना चाहिए। इससे हमें ही लाभ है। वे अच्छे रहेंगे तो हमारा काम भी अच्छी तरह करेंगे।

पालतू जानवरों के अलावा बहुत-से जंगली जानवर भी होते हैं। वे जंगलों में रहते हैं। जैसे शेर, चीता, भेड़िया, रीछ आदि। जंगल के ये जानवर खूँखार होते हैं। जंगल में ये दूसरे जानवरों को मारकर खाते हैं।

इन जानवरों को तुम चिड़ियाघर या सर्कस में देख सकते हो। सर्कस में जंगली जानवर तरह-तरह के खेल-तमाशे दिखाते हैं। ये काम उन्हें सिखाये जाते हैं। सर्कस में वे भी एक-दूसरे के साथ मिल-कर काम करना और रहना सीख जाते हैं।

तुमने घर, स्कूल और पशुओं के बारे में कई बातें समझीं।

अब तुम इससे कुछ आगे की बातें जानोगे। घर के बारे में कुछ और बातें। धरती और किसान के बारे में कुछ बातें। अलग-अलग कामों में जो लोग हमारी सहायता करते हैं, उनके बारे में कुछ बातें। तुम यह भी जानोगे कि हम

एक स्थान से दूसरे स्थान को कैसे जाते हैं। सड़क पर चलते समय हमें किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए ?

इसी तरह गाँव और शहर एक-दूसरे की सहायता कैसे करते है ? गाँववाले शहरवालों की सहायता कैसे करते हैं ? शहरवाले गाँव वालों की सहायता कैसे करते हैं और कौन-कौन लोग हमारी सहायता करते हैं ?

अभ्यास

१—घर से हमें क्या लाभ है ?
२—हजारों साल पहले लोग किस तरह रहते थे ?
३—हमें स्कूल से क्यों प्यार करना चाहिए ?
४—पालतू पशुओं के नाम बताओ।
५—पशुओं से हमें क्या लाभ हैं ?

१. हमारा घर

पिताजी—अशोक, तुम्हें यह नया घर पसन्द आया ? कमला बेटी ! तुम बताओ, तुम्हें यह घर कैसा लगा ?

अशोक—पिताजी, हमारा नया घर बहुत अच्छा है। इसमें हमारे काम की सभी चीजें हैं।

कमला—हाँ पिताजी और इसमें हमारे आराम की भी सभी चीजें हैं। रसोई में नल लगा हुआ है। स्नान-घर में नल है और पखाने में भी नल है। सभी कमरों में बिजली की बत्तियाँ हैं। अब सीढ़ियों में रात को ठोकर खाकर गिरने का डर नहीं है।

सीढ़ियों में भी बत्ती है। आँगन में भी बत्ती है।

अशोक—पिताजी, पंखे के नीचे तो दोपहर को भी गरमी मालूम नहीं होती। रेडियो से बच्चों के लिए कितने अच्छे प्रोग्राम आते हैं! कहानी, कविता, नाटक, गीत और चुटकुले। और भी बहुत-से अच्छे-अच्छे प्रोग्राम आते हैं।

कमला—पिताजी, इस नये घर में खूब खिड़कियाँ और रोशनदान हैं। हवा और प्रकाश खूब आते हैं।

अशोक—हमें पढ़ने-लिखने के लिए अलग कमरा मिल गया, यह सबसे अच्छा हुआ। किताबों की अलमारी भी बहुत बढ़िया है। पिताजी, इन क्यारियों में मैं फूलों के पौधे लगाऊँगा।

पिताजी—अब एक बात मेरी भी सुन

लो। हमें इस घर को साफ-सुथरा रखना चाहिए। कमला, तुम्हें घर की सफाई करने में अपनी माँ की मदद करनी चाहिए। रद्दी कागज और कूड़ा कूड़ेदान में डालने चाहिए। घर की नालियों को भी साफ-सुथरा रखना चाहिए। दीवारों को गन्दे हाथों से या खड़िया, कोयले और स्याही से गन्दा नहीं करना चाहिए।

कमला—पिताजी, आपने कहा था कि बढ़िया-बढ़िया तस्वीरें और सजावट की चीजें लायेंगे। कब लायेंगे पिताजी ?

पिताजी—बेटी किसी दिन चाँदनी-चौक चलेंगे। वहाँ सब चीजें मिल जाती हैं। वहाँ से लायेंगे।

अशोक—पिताजी, आप कहते थे कि गाँव में भी हमारा एक घर है। वह भी ऐसा ही है क्या ?

पिताजी—नहीं बेटा, गाँव और शहर के घरों में फर्क होता है। गाँव का घर कच्चा है। उसमें न तो बिजली है और न पानी का नल। वह इस घर से छोटा है। बात यह है कि घर बनाने का तरीका बदलता रहता है। आज से हजारों साल पहले हमारे पुरखा जंगलों में वृक्षों पर रहते थे। गरमी के मौसम में वे लू से झुलस जाते। बरसात होती तो पानी से भीग जाते। सर्दी का मौसम आता तो हवा में जाड़े से ठिठुरते। कभी कोई जंगली जानवर उन पर हमला कर बैठता। बड़ी मुसीबत थी। न आराम था, न चैन था।

फिर वे गुफाओं में रहने लगे। तब उन्हें धूप, बरसात और जाड़े का उतना डर नहीं रहा। पर अँधेरी और सीली गुफाओं में रहना उन्हें अच्छा नहीं लगा।

उनके रहने की कोई एक जगह नहीं थी। आज यहाँ तो कल वहाँ। तब वे जानवरों की खालों को तानकर तम्बू जैसा बनाने लगे। पर जब वे एक जगह टिककर रहने लगे तो उन्हें अच्छे घर की जरूरत पड़ी।

फिर उन्होंने झोंपड़े बनाये। उन्हें घास-पात से छाकर रहने लगे। फिर धीरे-धीरे उन्होंने पहले से अच्छे घर

बनाने सीख लिये। वे लकड़ी, पत्थर और ईंट से बने घर में रहने लगे।

बच्चो ! जंगली आदमी भी घर बनाकर रहता था और आज का आदमी भी घर में रहता है। पर तब के और आज के घर का रूप कितना बदल गया है ! अब तो ऐसे घर भी बन गये हैं, जिनमें न सर्दी लगती है न गरमी। कल को ऐसे घर भी बन जायेंगे, जिनमें इससे भी ज्यादा आराम मिल सकेगा।

अभ्यास

हमने सीखा—

१—सभी लोगों को, चाहे वे कहीं भी रहते हों, घर की जरूरत होती है। हजारों वर्ष पहले भी आदमी को घर की जरूरत थी और आज भी है।

२—घर हमें गरमी, बरसात और सर्दी से बचाता है। शत्रुओं और चोरों से हमारी रक्षा करता है।

३—मनुष्य अपने घर को सदा ही आराम देनेवाला और सुन्दर बनाने का प्रयत्न करता रहा है।

हमें चाहिए—

१—हम अपने घर को साफ-सुथरा रखें।

२—फूलों की क्यारियों से, अच्छी-अच्छी तस्वीरों से और अच्छी-अच्छी चीजों से हम अपने घर की सजावट करें।

खेल-खेल में काम—

१—अपने घर का चित्र बनाओ।

२—अपने एलबम में घरों के जितने नमूने मिल सकें, उन्हें चिपकाओ।

२. कल पानी बन्द रहेगा

पिताजी—कमला, जाओ अपनी माँ से कह दो कि रात को बहुत-सा पानी भर-कर रख ले। कल नल में पानी नहीं आयगा।

कमला—पिताजी, आपको कैसे मालूम हो गया कि कल नल में पानी नहीं आयगा।

पिताजी—पहले मैंने जो काम बताया, उसे करके आओ; तब फिर बताऊँगा। और सुनो, अशोक को भी बुला लाओ।

[कमला बाहर जाती है और थोड़ी देर बाद अशोक के साथ भीतर आती है]

कमला—पिताजी, हम दोनों आ गये। अब बताइये।

पिताजी—लो, सुनो। अखबार में लिखा है कि कश्मीरी गेट के इलाके में कल पानी बन्द रहेगा।

अशोक—पर पिताजी, पानी क्यों बन्द रहेगा? उसे कौन बन्द करेगा?

पिताजी—शाबाश! तुमने ठीक बात पूछी। आज मैं तुम्हें पानी की पूरी कहानी सुनाऊँगा। यह तो तुम जानते ही हो कि हमारे घर की, पानी की पतली नली गली-वाली लोहे की नली से जुड़ी हुई है। गलीवाली नली से और भी कई घरों को पानी जाता है। इसी तरह गलीवाली नली एक दूसरी बड़ी नली से पानी लेती है। और इसी तरह बड़ी नलियाँ बड़ी टंकी से पानी लेती हैं।

दिल्ली में कई ऊँची-ऊँची जगहों पर पानी की बड़ी-बड़ी टंकियाँ बनी हुई हैं। इन टंकियों से शहर के अलग-अलग भागों को पानी जाता है। अब तुम पूछोगे कि इन टंकियों में पानी कहाँ से आता है ? तुम्हारा यह पूछना ठीक ही है।

यमुना के किनारे ऊपर की ओर, वजीराबाद नामक एक जगह है। वजीराबाद में यमुना नदी का पानी बड़े-बड़े पम्पों के द्वारा एक जगह जमा किया जाता है। उसमें मिट्टी और रेत मिला हुआ होता है। वह मिट्टी और रेत नीचे बैठ जाता है और पानी कुछ साफ हो जाता है। फिर उसे लोहे के बड़े-बड़े नलों द्वारा नीचे चन्द्रावल-२ नामक स्थान में लाते हैं। वहाँ फिर उसकी रेत और मिट्टी नीचे टंकी की तली में बैठ जाती

है। इस तरह पानी पहले से ज्यादा साफ हो जाता है।

पानी को वहाँ से फिर लोहे के वैसे ही बड़े-बड़े नलों द्वारा चन्द्रावल-१ नामक स्थान पर लाते हैं। यह स्थान पुराने बड़े दफ्तर

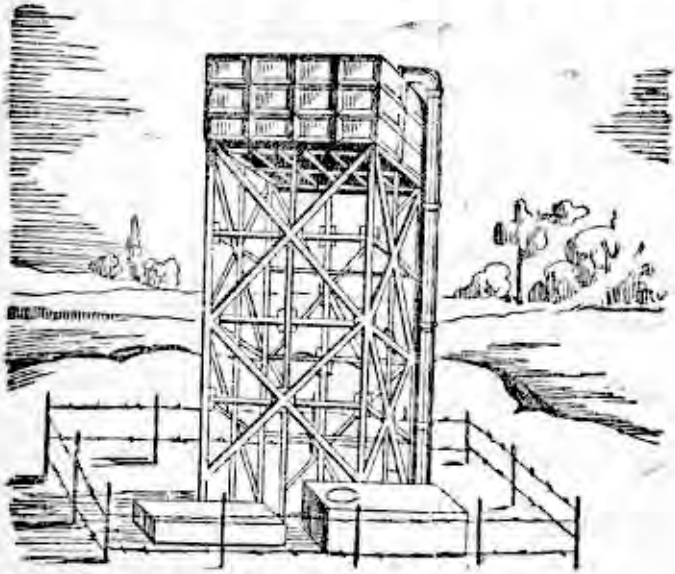

के ठीक पीछे है। किसी दिन तुम्हें ले जाकर दिखलाऊँगा। उसे 'जलाशय' कहते हैं। वहाँ पानी को मशीनों द्वारा साफ किया जाता है।

वे बड़ी-बड़ी मशीनें बिजली से चलती हैं। वहाँ पानी में 'क्लोरीन' नामक एक दवाई भी मिलाई जाती है। यह दवाई बीमारी के कीटाणुओं को मारती है। तब वह पानी पीने के योग्य हो जाता है।

वहाँ से पानी को लोहे के बड़े-बड़े नलों द्वारा शहर के अलग-अलग भागों में बनी हुई टंकियों में पहुँचाया जाता है।

एक बात और समझ लो। तुम बता सकते हो कि पानी की टंकी बहुत ऊँची क्यों बनाई जाती है? इसलिए कि टंकी जितनी ऊँची होती है, नलियों के पानी का दबाव उतना ही बढ़ जाता है। और यह दबाव ही पानी को मकानों में दूसरी और तीसरी मंजिल तक पहुँचाता है।

कमला—पिताजी, आपने यह तो

बताया ही नहीं कि यमुना में पानी कहाँ से आता है।

पिताजी—बस, अब मैं तुम्हें यही समझाने वाला था। तुमने यह अच्छा सवाल पूछा। यह तो तुम जानते ही हो कि नदियाँ पहाड़ों से निकलती हैं। यमुना नदी भी हिमालय पर्वत से निकली है। हिमालय पर्वत तो बर्फ का घर ही है। बर्फ गलती है पानी की छोटी-छोटी नालियाँ मिलकर एक बड़ा नाला बनाती हैं। फिर उसमें कई और नाले इधर-उधर से आकर मिल जाते हैं और नदी बन जाती है। कुछ नदियाँ पहाड़ों की बड़ी-बड़ी झीलों से निकलती हैं।

अब एक और सवाल उठ खड़ा हुआ। पहाड़ों पर बर्फ कहाँ से आई? पहाड़ों पर बर्फ बादलों ने गिराई। बादल जब बहुत

ऊँचे पहाड़ों पर उड़ते हैं तो ठंड से उनका पानी जम कर बर्फ बन जाता है और बोझिल बन जाने से वहीं गिर पड़ता है। खड्डों, नालों, झीलों, तालाबों और कुओं में जो पानी होता है, वह वर्षा से ही मिलता है।

गरमियों में कितने ही तालाब, खड्डे और नाले सूख जाते हैं। वर्षा नहीं होती है तो फसलें नहीं उगती हैं। इसलिए लोग इतने गहरे कुएँ खोदते

हैं जो गरमी में भी नहीं सूखते। नदियों से नहरें निकालकर खेतों को सींचते हैं, जिससे खेती हरी-भरी रहती है। जहाँ नहरें नहीं हैं, वहाँ मशीनों कुओं से सिंचाई करते हैं। इन कुओं को ट्यूब-वैल भी कहते हैं।

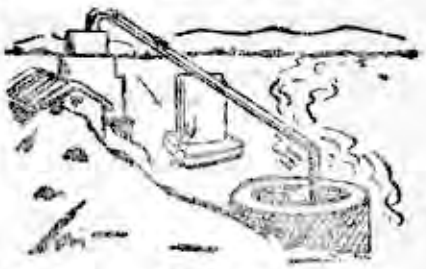

पानी के बिना हम जीवित नहीं रह सकते। तुम जानते हो, गरमियों में जब कि जोर की प्यास लगती है, तब यदि घड़ी-भर पानी न मिले तो क्या हाल होता है! गला सूख जाता है। प्यास के मारे मुँह से बात तक नहीं निकलती। आदमी रोटी के बिना तो कुछ दिन जी सकता है, पर पानी के बिना नहीं। अगर पानी न हो तो खेती भी नहीं होगी। खेती नहीं होगी तो लोग खायेंगे क्या? भूखों मर जायँगे। पानी के

बगैर पेड़-पौधे भी सूख जाते हैं। फिर हमें मीठे-मीठे फल कहाँ से मिलेंगे? पशु और पक्षी भी पानी के बिना जीवित नहीं रह सकते। पशु न रहें तो दूध, दही, लस्सी, मक्खन, घी कहाँ से मिले। भोजन बनाने के लिए,

कपड़े धोने के लिए, नहाने के लिए हमें पानी चाहिए।

पानी है तो सब कुछ है, पानी नहीं तो कुछ भी नहीं। इतना कीमती है यह पानी।

पानी को कभी बेकार मत गँवाओ। पानी लेने के बाद नल को बन्द कर दो। पानी को कभी गन्दा मत करो। स्कूल में पीने का पानी अच्छी तरह ढककर रखना चाहिए। गन्दा पानी कभी मत पीओ। कुएँ-तालाब आदि के आस-पास गन्दगी मत फैलाओ। पानी इधर-उधर गिरने से कीचड़ हो जाता है और गन्दगी फैलती है।

एक बार गांधीजी एक गाँव में गये। गाँव में तालाब था। उसीमें से गाँव के लोग पानी भरते। नहाते भी उसीमें और कपड़े भी उसीमें धोते। इतना ही नहीं, पशु भी उसीमें पानी पीते। भैंसें तालाब में मजे से नहातीं। पानी में ही पेशाब और गोबर भी कर देतीं। उस तालाब का पानी बेहद गन्दा था।

गांधीजी ने सोचा--'इस गाँववाले बड़े

आलसी और नासमझ हैं। इन्हें सफाई की सीख देनी चाहिए।' उन्होंने कुदाल और टोकरी उठाई और तालाब के किनारे का कूड़ा-कचरा उठाकर दूर फेंकने लगे।

गाँव के लोगों ने देखा--कोई बूढ़ा तालाब के किनारे का कूड़ा साफ कर रहा है। "अरे ! ये तो गांधीजी हैं।" लोगों ने उन्हें पहचान लिया।

गाँववालों को बहुत शर्म आई। इतने बड़े आदमी हमारा छोटा-सा काम कर रहे हैं। उन्हें अपनी भूल समझ में आ गई। उन्होंने बापू के हाथ से कुदाल और टोकरी ले ली। सारे गाँव के लोग तालाब की सफाई में जुट गये।

अभ्यास

हमने सीखा –

१—पानी के बिना आदमी, पशु-पक्षी और पेड़-पौधे कोई भी जीवित नहीं रह सकता।

२—पानी के तीन रूप होते हैं—भाप (बादल), बर्फ और पानी।

३—नदियों, झीलों, तालाबों, कुओं आदि से हमें पानी मिलता है।

हमें चाहिए—

१—पीने के पानी को बेकार न गँवाएँ। नल की टोंटी खुली न छोड़ें।

२—नदी, कुएँ, तालाब, झील आदि के आस-पास गन्दगी न फैलाएँ।

३—गन्दा पानी न पीयें। पीने के पानी को ढककर रखें।

खेल-खेल में काम—

१—गीली मिट्टी से कुएँ या तालब का नमूना बनाओ।

२—अपने अध्यापक से पूछो— तीन-चार मंजिल वाले मकानों में नल का पानी ऊपर कैसे चढ़ता है ?

३. गाँव की ओर

पिताजी — अशोक ! जल्दी-जल्दी तैयार हो जाओ। आज तुम दोनों भाई-बहिनों को सीलमपुर गाँव दिखाने ले जाऊँगा। हम फव्वारे से ११ नम्बर बस में बैठकर सीलम-पुर जाएँगे। यह गाँव यमुना के पार शाहदरा के पास है।

(फव्वारे पर पहुँचकर ११ नम्बर बस में बैठते हैं और सीलमपुर के बस-स्टाप पर उतर जाते हैं।]

पिताजी—यह देखो, इस तरफ की जमीन एक-जैसी है। ऊँची-नीची नहीं है। अब दूसरी ओर देखो। यहाँ की जमीन में कई गड्ढे बने हुए हैं। यह ऊँची-नीची है।

जो जमीन एक जैसी होती है, उसमें किसान खेत बनाकर खेती करते हैं। ऊबड़-खाबड़ जमीन में फसल पैदा नहीं होती। वहाँ छोटी-छोटी घास उग आती है। किसान के पशु वहाँ चरते हैं। उसे चरागाह कहते हैं। नदी के किनारे की जमीन और मैदानी चमीन उपजाऊ होती है।

यह देखो, हमारी बाईं ओर बाग है। इसमें आम, अमरूद आदि कई तरह के फलों के पेड़ हैं।

जो जमीन उँची, उबड़-खाबड़ और पथरीली होती है, उसे पहाड़ी कहते हैं। इसी तरह अपने आस-पास की धरती से जो जमीन ऊँची होती है, उसे पहाड़ कहते हैं। पहाड़ों पर प्रायः घने हरे-भरे पेड़-पौधे, झाड़ियाँ और घास होती है।

जमीन के किसी बड़े भाग में घने पेड़-पौधे उगे होते हैं, तो उसे जंगल कहते हैं। ये जंगल हमारे लिए बड़े उपयोगी होते हैं। जंगल के वृक्षों की लकड़ी जलाने और किवाड़, चारपाई, मेज-कुर्सी आदि बनाने के काम आती है।

अशोक—पिताजी, एक दिन आप कह रहे थे कि जंगलों में हाथी और शेर होते हैं।

पिताजी—हाँ बेटा, जंगलों में तरह-तरह के जानवर होते हैं। उनमें से शेर-चीता आदि तो छोटे-छोटे जानवरों को खाकर ही अपना पेट भरते हैं।

कमला—पिताजी, पिछले दिनों रमेश और उसके माता-पिता पहाड़ पर गये थे। वे पहाड़ पर क्यों गये थे पिताजी ?

पिताजी—बेटी, पहाड़ों पर गरमी कम होती है। इसलिए गरमियों में लोग पहाड़ों पर जाते हैं। ऊँचे पहाड़ों पर बर्फ पड़ी रहने से उनकी ढलानों पर ठंड रहती है। इसके अलावा पहाड़ों पर से दूर-दूर तक का दृश्य दिखाई देता है। पहाड़ हरे-भरे होने से खुद भी देखने में बड़े सुन्दर लगते हैं।

अशोक—पिताजी, आपने हमें बताया था कि हमारे देश का एक आदमी दुनिया

की सबसे ऊँची पहाड़ी चोटी पर चढ़ा था। उसका क्या नाम था पिताजी ?

पिताजी—बेटा, उसका नाम था तेनसिंह। वह ऐवरेस्ट नामक चोटी पर चढ़ा था। इस तरह ऊँची चोटियों पर चढ़ना बड़ी बहादुरी का काम माना जाता है।

कई पहाड़ियाँ पथरीली होती हैं। उन पर बड़े वृक्ष नहीं उगते। उन पहाड़ियों का पत्थर हमारे बड़े काम आता है। उस पत्थर से घर और सड़कें बनती हैं।

सच तो यह है कि पहाड़, जंगल, मैदान और पथरीली पहाड़ियाँ सभी जगहें हमारे काम की हैं। मैदानी और उपजाऊ घाटियों में खेती होती है। जंगलों से लकड़ी मिलती है। पहाड़ों पर तरह-तरह के मीठे फल होते हैं। वहाँ हम सैर-सपाटे के लिए जाते हैं। पथरीली पहाड़ियों पर फसल नहीं होती। पर

उनका पत्थर हमारे काम आता है। नदियों की घाटियाँ खूब उपजाऊ होती हैं। नदियाँ हमें पानी देती हैं। चप्पा-चप्पा धरती से हम कोई-न-कोई उपयोगी काम लेते हैं। हमारे लिए सभी तरह की धरती उपयोगी है।

अच्छा, चलो अब घर चलें। अब किसी दिन तुम्हें पास के गाँव में ले चलेंगे।

अभ्यास

हमने सीखा—

१—धरती सभी जगह एक-जैसी नहीं होती। कहीं मैदान हैं, तो कहीं पहाड़; कहीं जंगल हैं, तो कहीं पथरीली पहाड़ियाँ।

२—मैदानों, नदियों की घाटियों और पहाड़ों की ढलान की धरती उपजाऊ होती है। वहाँ हम अनाज, सब्जियाँ और फल उगाते हैं।

३—जंगलों से हमें लकड़ी मिलती है।
पत्थर मकान आदि बनाने के काम आता है।
बंजर धरती में घास उगती है। पशु चरते हैं।

हमें चाहिए—

१—अपने आस-पास के इलाके में घूमें। एक जगह से दूसरी जगह में जो अन्तर दिखाई दे, उसे कापी में लिखें।

२—पहाड़ों के ऊपर से आस-पास का सुन्दर दृश्य देखें।

३—जंगलों की हरियाली और पशु-पक्षियों को देखकर अपना मन बहलाएँ।

खेल-खेल में काम—

१—मैदान, घाटी और पहाड़ के मिट्टी से नमूने बनाएँ।

२. अशोक और कमला रामू किसान से मिले

अशोक और कमला—पिताजी, हम तैयार होकर आ गये।

पिताजी—आज हम फिर सीलमपुर चलेंगे। वहाँ एक किसान से मिलेंगे।

[फव्वारे पर जाकर ११ नम्बर बस पर बैठते हैं और सीलमपुर के बस-स्टाप पर उतर जाते हैं।]

कमला—पिताजी, यहाँ तो घर दिखाई नहीं देते?

पिताजी—बेटी, अभी दीख जायंगे। हम उस तरफ जायंगे। वह देखो, सामने रेलवे लाइन है। बस, इसके दूसरी ओर सीलमपुर गाँव है।

[लाइन पार करते ही गाँव दिखाई देता है। ढलवाँ सड़क के बाईं ओर पहले मंदिर आता है।]

यह गाँववालों का मंदिर है। लोग सुबह-शाम आरती-पूजा करने आते हैं। चबूतरे पर बैठकर कीर्तन-भजन गाते हैं। अब चलो न, तुम्हें गाँव की चौपाल दिखा दें। दाईं ओर चलो। यह चौपाल है। गाँव के लोग यहाँ बैठकर पंचायत करते हैं। आपसी झगड़े निपटाते है और गाँव की भलाई की बातें सोचते हैं। शाम को यहाँ बैठकर रेडियो सुनते हैं और अपना मन बहलाते हैं।

कमला—पिताजी, चलिए उस ओर खेत में चलें। वहाँ कुछ लोग काम कर रहे हैं। वे क्या कर रहे हैं पिताजी ?

पिताजी—चलो, उन्हींसे चलकर पूछ लो। वे तुम्हें अपने आप बता देंगे।

[खेत में किसान के पास जाते हैं।]

पिताजी—नमस्ते किसान भाई !

अशोक और कमला—(हाथ जोड़कर) नमस्ते जी !

किसान—जयरामजी की बाबूजी ! कहिये बाबूजी, आप लोगों की क्या सेवा करूँ ! यहाँ खेत में तो बैठने के लिए भी कुछ नहीं है। हम लोग तो जमीन पर ही बैठकर

खा-पी लेते हैं और सुस्ता लेते हैं। पर आप लोग तो शहर के रहनेवाले हैं। आपके कपड़े खराब हो जायंगे।

पिताजी—किसान भाई! ये दोनों मेरे बच्चे हैं! ये दोनों बच्चे आपके काम के बारे में कुछ बातें जानना चाहते हैं। मैं जानता हूँ, आपको अभी बहुत काम करना होगा। फिर भी मेहरबानी करके थोड़ा-सा समय निकालकर इन बच्चों को खेती-बाड़ी के बारे में समझा दें। आपकी बड़ी कृपा होगी।

किसान—बाबूजी, किसान का काम तो कभी समाप्त होता ही नहीं। घड़ी-भर बच्चों के साथ बात करने में क्या फर्क पड़ेगा। बाबूजी, आप लोगों के लिए घर से दूध मँगाता हूँ। वह पास ही मेरा घर है।

पिताजी—नहीं भाई! हम तो खा-पीकर घर से चले हैं।

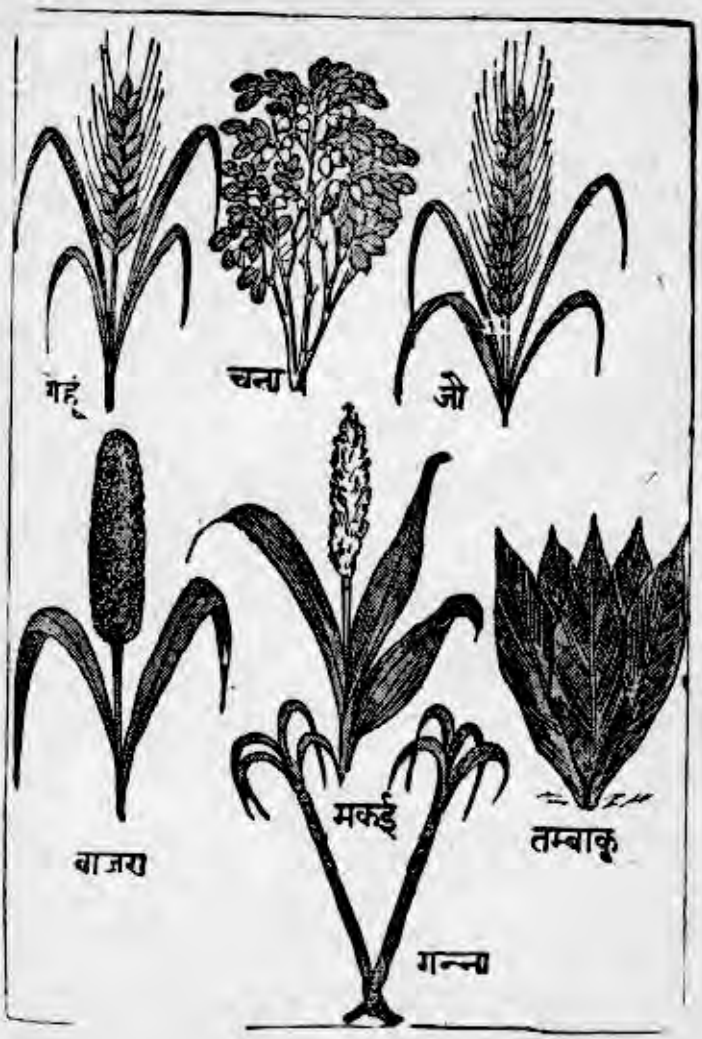
गेहूं
चना
जौ
बाजरा
मक्का
तम्बाकू
गन्ना

किसान—छोटे बाबू ! पूछो क्या पूछना चाहते हो ?

अशोक—आप हमें खेती-बाड़ी के बारे में सारी बातें बताइए।

किसान—ठीक है। हम साल में दो फसलें उगाते हैं। आजकल गेहूँ की फसल बीज रहे हैं। सरसों, चना, मसूर, मटर भी इन्हीं दिनों बोया जाता है। यह फसल अप्रैल-मई में तैयार हो जाती है। इसे काटने के बाद हम मक्की, ज्वार, बाजरा और धान की फसल बोते हैं। घीया, तोरई, कद्दू, करेला ये सब्जियाँ भी इसी मौसम में होती हैं। खरबूजे, तरबूज, खीरे और ककड़ियाँ मार्च में बोई जाती हैं। ये फल रेतीली जमीन में अच्छे होते हैं। यमुना के किनारे की रेती में इनकी पैदावार खूब होती है।

मेरे पास दो बैल हैं। बैलों से हल जोतते हैं। रहट चलाते हैं। बैल गाड़ी में भी जोते जाते हैं। बैल किसान का बहुत काम करता है। मेरे पास एक गाय और एक भैंस है। हम गाय का दूध पीते हैं। भैंस के दूध से दही, लस्सी, मक्खन और घी बनाते हैं। कुछ दूध हम बेच देते हैं। उससे जो रुपये मिलते हैं, उनसे घर की जरूरत का सामान खरीद लेते हैं।

पशुओं के गोबर और पेशाब से बढ़िया खाद बनती है। खाद को हम खेतों में डालते हैं। इससे फसल खूब पैदा होती है। मैं अपने खेतों की सिंचाई रहट से करता हूँ। यहाँ सिंचाई के लिए कोई नहर नहीं है। वैसे समय पर वर्षा होती रहे तो सिंचाई की जरूरत नहीं पड़ती।

मैंने अभी आपको बताया कि गाय-बैल

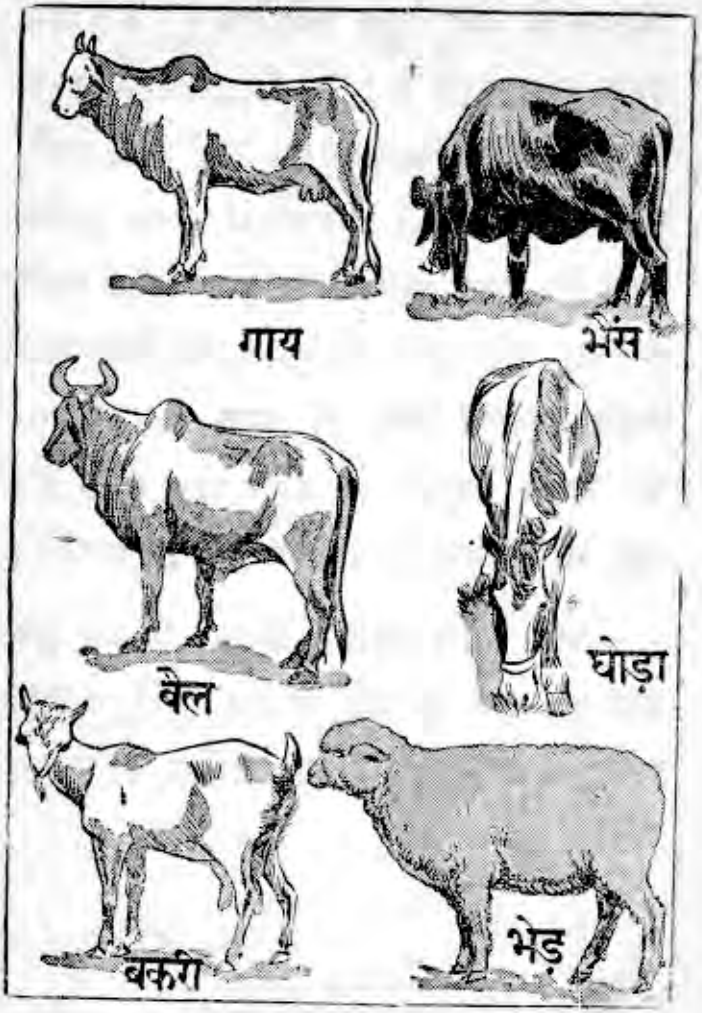
गाय
भैंस
बैल
घोड़ा
बकरी
भेड़

किसान के लिए बहुत उपयोगी हैं। वे हमारा बहुत काम करते हैं। बाबूजी, इसके बदले हम भी उनकी खूब सेवा करते हैं। उन्हें घास-पानी, चारा-दाना देते हैं। बीमारी में उनका इलाज करते हैं। उनके आराम का पूरा ख्याल रखते हैं। सच तो यह है कि हम उनकी देख-भाल अपने घरवालों जैसी ही करते हैं। किसान को अपने पशुओं से बहुत प्यार होता है। पशु भी मालिक से उसी तरह प्यार करते हैं।

अब अपने औजारों के बारे में भी कुछ बता दूँ। हल, कुदाली, दराँती, खुर्पी, फावड़ा आदि मेरे औजार हैं। हल से जमीन की जुताई

हल

सुहागा

द्रांती

होती है। कुदाली बेकार की घास को खेतों से उखाड़ने और मिट्टी को पोला करने के काम आती है। दराँती से मैं फसल काटता हूँ। कुदाल और फावड़ा सिंचाई के लिए नालियाँ बनाने, मिट्टी खोदने और हटाने के काम आते हैं।

एक बहुत जरूरी बात बताना तो मैं भूल ही गया। यह मौसम की बात है। कभी-कभी समय पर मेंह नहीं बरसता। फसलें सूख जाती हैं। इस कमी को तो किसी हद तक रहट से सिंचाई करके हम पूरा कर लेते हैं। परन्तु कई बार इतना अधिक पानी बरसता है कि खेती तबाह हो जाती है। यमुना में बाढ़ आने से भी नदी किनारे के खेत पानी में डूब जाते हैं। इससे किसानों को बड़ी परेशानी होती है।

कौन-सी फसल कब बोनी चाहिए, किसान

यह बहुत अच्छी तरह जानता है। मौसम की भी उसे अच्छी जानकारी होती है। अब वर्षा होनेवाली है और अब मौसम खुश्क रहेगा—ये बातें वह जानता है। किस फसल के लिए कैसी जमीन चाहिए, यह भी किसान खूब जानता है। मैंने खेती के बारे में मोटी-मोटी बातें आपको बतायीं। अब यदि कोई बात अपनी ओर से पूछना चाहो तो पूछो।

अशोक—आप दिन में कितने घंटे काम करते हैं ?

किसान—(हँसकर) छोटे बाबू, किसान को बहुत मेहनत करनी पड़ती है। हम लोग दिन निकलने से पहले ही काम में जुट जाते हैं। दोपहर की रोटी यहीं खेत के किनारे बैठकर खा लेते हैं। शाम को दिन छिपने तक और कभी तो दिन छिपने के बाद भी काम करते रहते हैं। चिलचिलाती धूप हो, वर्षा की बौछार

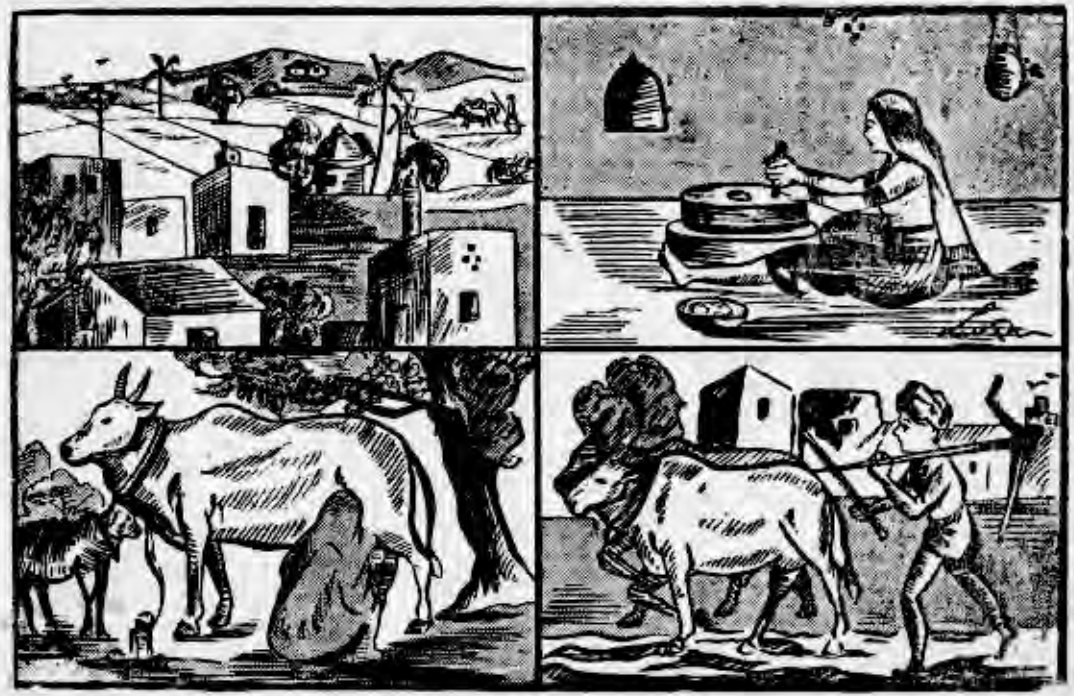

हो या कड़ाके की सर्दी हो; हम अपने खेतों में काम करते रहते हैं।

पिताजी—अच्छा भाई, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद! आपने अपना कीमती समय हमारे लिए खर्च किया। मेहरबानी करके अपना शुभ नाम तो हमें बताइये।

किसान—बाबूजी, मुझे रामू कहते हैं। यह मेरी घरवाली है। यह भी मेरे साथ खेत में काम करती है। चौके-चूल्हे और पशुओं की देख-भाल मेरी अम्मा करती हैं। वे इस समय घर पर हैं। अशोक बाबू जितना ही मेरा भी एक बेटा है। वह स्कूल जाता है। घर के काम में भी हमारी मदद करता है।

पिताजी—रामू भाई, अब हम चलेंगे। नमस्ते!

अशोक और कमला—नमस्ते जी!

रामू किसान—जय रामजी की बाबूजी।

[चले आते हैं]

पिताजी—(चलते-चलते) किसान धन्य है! बेचारा कितनी मेहनत करता है! किसान सारे देश के लिए अनाज, दालें और सब्जियाँ पैदा करता है। दूध, दही, मक्खन और घी भी किसान ही हमें खिलाता-पिलाता है। शहरों में जो हजारों मन अनाज और ढेरों सब्जियाँ रोज बिकने आती हैं, वह सब किसान की मेहनत का ही फल है। किसान न हो तो लोग भूखों मर जायं।

अशोक—पिताजी, रामू चाचा बड़े अच्छे हैं। उन्होंने सारी बातें हमें समझा दीं।

कमला—हाँ पिताजी, रामू चाचा बहुत अच्छे हैं।

अभ्यास

हमने सीखा—

१—किसान हमारे लिए बहुत उपयोगी काम करता है। वह हमारे लिए अनाज, सब्जियाँ और फल उगाता है।

२—किसान बैलों से जमीन जोतते हैं, रहट चलाते हैं और उन्हें बैलगाड़ी में भी जोतते हैं।

३—गायें-भैंसें दूध देती हैं, जिससे दही, मक्खन, घी और लस्सी बनती है। दूध भी गाँवों से ही आता है।

हमें चाहिए—

१—हमें बड़ी मेहनत करनेवालों का मान करना चाहिए।

२—अनाज, सब्जियाँ आदि खाने की वस्तुएँ बेकार नहीं गँवानी चाहिए। जितनी भूख हो, उतनी ही लेनी चाहिए, जूठी नहीं छोड़नी चाहिए।

खेल-खेल में काम—

१—अनाजों के नमूने लो और उन्हें अलग-अलग शीशियों में डालकर, बाहर अनाज के नाम की चिट लगाओ।

२—घर या स्कूल के आँगन में जहाँ जगह हो, क्यारियों में फल और सब्जियाँ उगाओ।

३—अपने अध्यापक की सहायता से किसान के औजारों के मिट्टी के नमूने बनाओ या उनके चित्र बनाओ।

तैयार कर लो। और फूलों के बीज भी ला दूँगा।

अशोक—पिताजी, फूलों के पौधे उगाने के लिए क्या-क्या करना चाहिए, यह तो आप हमें बता देंगे न?

पिताजी—बेटा, मैं सब बातें जानता हूँ। तुम्हें समझा दूँगा।

[उसी दिन शाम को]

कमला—अशोक, पिताजी आ गए। आओ चलकर देखें, फुलवाड़ी के लिए क्या-क्या सामान लाए हैं।

[दोनों पिताजी के पास जाते हैं]

पिताजी—तुम दोनों आ गए! मैं तो तुम्हें अभी बुलाने वाला ही था। यह देखो, फुलवाड़ी के लिए सामान ले आया हूँ। यह खुर्पी है; इससे क्यारी की मिट्टी को पोला करते हैं। और यह कुदाली है; यह भी मिट्टी

खोदने और क्यारियों से बेकार की घास उखाड़ने आदि के काम आती है।

कुदाल कस्सी खुरपा पानी का फव्वारा

मिट्टी के ढेलों को तोड़कर बारीक कर देते हैं। फिर मिट्टी में खाद मिलाते हैं। खाद पौधों की खुराक होती है। यह गोबर की खाद है। खाद को मिट्टी में अच्छी तरह मिला देना चाहिए।

अब यह देखो, छोटे-छोटे लिफाफे। इन में फूलों के बीज हैं। यह देखो, लिफाफे पर फूल का चित्र बना हुआ है। इस लिफाफे में इस फूल के बीज हैं। लिफाफे पर फूल का नाम, इसे बोने का समय आदि बातें लिखी हुई हैं। मैं अभी चार तरह के फूलों के बीज

लाया हूँ। क्यारी को हम चार हिस्सों में बाँट देंगे और चारों तरह के बीज अलग-अलग बो देंगे। बीज बोने के बाद ये लिफाफे खाली हो जायेंगे। इन्हें हम फेंकेंगे नहीं। चार लम्बी-

पतली लकड़ियाँ लेकर, उनके एक सिरे पर टोपी की तरह इन लिफाफों को लगा देंगे। फिर जिस क्यारी में, जिस फूल के बीज बोये होंगे, उसके लिफाफे वाली लकड़ी को उस

क्यारी में गाड़ देंगे।

जानते हो, इससे क्या लाभ होगा? लिफाफों को देखकर हमें पता लग जायेगा कि कौन-सी क्यारी में कौन-से फूल के बीज बोये हैं और उस फूल का रंग और आकार कैसा है। फिर क्यारियों को पानी से सींचेंगे।

कमला—पिताजी, इन बीजों में गुलाब के बीज भी हैं न?

पिताजी—बेटी, गुलाब का पौधा बीज से नहीं उगता। कुछ और पौधे भी ऐसे होते हैं जो बीज से नहीं उगते।

अशोक—बीज से नहीं उगते तो फिर कैसे उगते हैं? बताइये न पिताजी!

पिताजी—वे कलम से उगते हैं। गुलाब के पौधे की टहनी को काटकर क्यारियों में या गमलों में गाड़ देते हैं। बस, टहनी से जड़ें फूट पड़ती हैं और पौधा लग जाता है। इसी

तरह आलू के भी बीज नहीं होते। आलू को काटकर कई टुकड़े कर लिये जाते हैं और उन्हें बो दिया जाता है। बस, उसी में अंकुर फूट पड़ते हैं और पौधा उग आता है।

अब पौधों की खुराक के बारे में और समझ लो। पौधों के लिए पाँच चीजों की जरूरत होती है: मिट्टी, खाद, पानी, धूप और हवा। इनमें से पानी, धूप और हवा की जरूरत आदमी को भी होती है। बस, केवल इतना फर्क है कि मिट्टी और खाद के बदले आदमी को अनाज, सब्जी, फल और दूध-घी की जरूरत होती है।

कमला—पिताजी, एक बढ़िया-सा गुलाब का पौधा जरूर ला दीजिये। मुझे उसकी बहुत जरूरत है।

पिताजी—ज़रा मैं भी तो सुनूँ कि गुलाब की ऐसी क्या जरूरत है मेरी बिटिया को!

कमला—पिताजी, आपने बताया था न कि स्वर्गीय पं० जवाहरलाल जी नेहरू को बच्चों और फूलों से बहुत प्यार था। और वे गुलाब का फूल सदा अपने कोट में लगाये रखते थे। १४ नवम्बर को बाल-दिवस मनाया जायेगा। मैं उस दिन चाचा नेहरू की समाधि पर गुलाब का फूल भेंट करूँगी।

पिताजी—शाबाश बेटी! मैं तुम्हारे लिए गुलाब के पौधे का गमला जरूर ला दूँगा।

अशोक—पिताजी, हम गमलों और टीन के डिब्बों में मिट्टी और खाद भर कर उनमें फूलदार पौधे लगायेंगे। फिर उन्हें इस दीवार पर रखेंगे। फिर हमारा घर देखने में बहुत बढ़िया लगेगा। फूलों की भीनी-भीनी सुगन्ध सारे घर में फैल जायेगी।

पिताजी—हाँ, ये बहुत अच्छे लगेंगे। अरे अशोक! तुम अपने स्कूल की क्यारियों

में भी तो फूलों के पौधे उगा सकते हो। और अगर वहाँ क्यारियों के लिए जगह न हो तो गमलों में लगा सकते हो। फूलों से स्कूल की शोभा दुगुनी हो जायेगी। फूल देखने में अच्छे लगते हैं। सुगन्ध देते हैं। क्यारियों में काम करने से मनोरंजन होता है। फालतू समय बेकार नहीं जाता।

फालतू समय का उपयोग करने के लिए कुछ लोग सैर-सपाटा करते हैं। कुछ लोग मैदान में खेलते हैं। कुछ लोग घर के अन्दर खेले जाने वाले खेल खेलते हैं। कुछ लोग टिकट इकट्ठा करते हैं और कुछ लोग चित्र बनाना सीखते हैं। ये सभी बातें अच्छी हैं। जिसके मन को, जो काम अच्छा लगे, उसके लिए वही ठीक है।

तो तुमने सब बातें समझ लीं न! अब कल से काम शुरू कर दो।

अभ्यास

हमने सीखा—

१—पौधे मिट्टी, खाद, पानी, धूप और हवा से बढ़ते हैं।

२—कुछ पौधे बीज से नहीं उगते। उनकी कलमें लगानी पड़ती हैं।

३—खुर्पी और कुदाली मिट्टी खोदने, क्यारियाँ बनाने और फालतू घास उखाड़ने के काम आती हैं।

४—फूल देखने में सुन्दर लगते हैं, सुगन्ध देते हैं, घर की सजावट बढ़ाते हैं।

हमें चाहिये—

१—हमें अपने फालतू समय का उपयोग—फुलवाड़ी लगाने, चित्र बनाने, टिकट इकट्ठे करने आदि कामों में करना चाहिये।

खेल-खेल में काम—

१—घर या स्कूल में फुलवाड़ी लगाओ।

१. ये हमारी सहायता करते हैं

पिताजी—अशोक, कमला, आज तो वर्षा हो रही है। आज घूमने-फिरने में मजा नहीं आयेगा। आज हम यहीं बैठकर बातचीत करेंगे। आज हम उन लोगों के बारे में बातें करेंगे, जो अपने कामों से हमारी सहायता करते हैं।

सच तो यह है कि कोई हमारे लिए काम करता है। किसी के लिए हम काम करते हैं। इस तरह हम एक-दूसरे की सहायता करते हैं। क्योंकि हमें एक-दूसरे की जरूरत होती है, इसलिए लोग पास-पास रहना पसन्द करते हैं। जब कई परिवार एक जगह रहने लगते हैं,

तो एक समाज बन जाता है। समाज में सभी तरह के लोग रहते हैं। उनमें औरतें, मर्द, बूढ़े और नौजवान, तन्दुरुस्त और बीमार, सभी लोग होते हैं। सीधी-सादी बात है कि जब तरह-तरह के लोग होंगे तो उनकी जरूरतें भी तरह-तरह की होंगी।

बच्चों को पढ़ाने के लिए अध्यापक चाहिए; बीमार के इलाज के लिए डाक्टर। चोरों और झगड़ा करने वालों से बचाने के लिए सिपाही चाहिए। रात को पहरा देने के लिए चौकीदार चाहिए। इसी तरह कई लोगों की जरूरत होती है। जो लोग हमारी सहायता करते हैं, हमें उनका आदर करना चाहिए।

यह तो तुम जानते ही हो कि अध्यापक बच्चों को पढ़ाता है। उन्हें अच्छी-अच्छी बातें सिखाता है। हिन्दी, गणित और समाज के बारे में अनेक उपयोगी बातें वह बच्चों को

सिखाता है। वह बच्चों की सफाई, खेल-कूद, लिखाई और पढ़ाई सभी बातों का ध्यान रखता है। वह बच्चों को ठीक ढंग से उठना-बठना, बात करना और बड़ों की आज्ञा मानना सिखाता है। ये सब बड़े काम की बातें हैं। बच्चों को अध्यापक की आज्ञा माननी चाहिए और उनका आदर करना चाहिए।

अशोक—पिताजी, हमारे अध्यापक जी बहुत ही अच्छे हैं। वे हमें बड़े प्यार से पढ़ाते हैं। हम सब उनका आदर करते हैं और उनकी आज्ञा मानते हैं।

कमला—पिताजी, हमें तो बहनजी गीत गाना और कहानी सुनाना भी सिखाती हैं। वे हमें चुटकुले सुनाकर खूब

हँसाती हैं। और हमें एक छोटा-सा नाटक खेलना भी उन्होंने सिखाया है। बाल-सभा में हमने वह नाटक खेला भी था। वे हमें बहुत प्यार करती हैं, हम भी उनका कहा मानती हैं।

* * *

पिताजी—अध्यापक की तरह डाक्टर भी समाज की बहुत सेवा करता है।

डाक्टर लोगों की बहुत सहायता करता है। वह बीमार की बीमारी का पता लगाता है। फिर दवाई देकर बीमारी को दूर करता है। वह बड़े ध्यान से रोगी की देख-भाल करता है। जब कभी रात में कोई बीमार हो जाता है तो डाक्टर रात-रात-भर जागकर बीमारी का इलाज करता है। वह अपने आराम की जरा भी परवाह नहीं करता। वह जानता है कि बीमारी का इलाज करना कितना जरूरी और अच्छा काम है।

* * *

अध्यापक
डाक्टर
सिपाही
बमकडक्टर
आगबुझानेवाला

अब तीसरा हमारी सहायता करने वाला पुलिस का सिपाही है।

कमला—पिताजी, मुझे तो पुलिस के सिपाही से डर लगता है।

पिताजी—बेटी, पुलिस के सिपाही से डरने की कोई बात नहीं है। लोग बच्चों को डराने के लिए यों ही कह देते हैं। पुलिस का सिपाही तो हमारी सबसे ज्यादा सहायता करता है। लो सुनो—

वह हमें चोरों-ठगों से बचाता है। रात को वह गली-मुहल्लों में घूमता है। वह इसलिए घूमता है कि किसी घर में कोई चोर चोरी न करे। कोई शरारती आदमी किसी से झगड़ा करता है तो सिपाही उसे पकड़ कर थाने में ले जाता है, इसलिए शरारती लोग सिपाही से डरते हैं।

चौराहे पर तो तुम रोज ही उसे खड़ा

देखते हो। वह सवारियों को आने-जाने में सहायता देता है। वह सबको बारी से चौराहा पार कराता है। इस तरह दुर्घटना होने से बचाता है। वह लोगों की जान बचाता है। रात को उनके घरों की रखवाली करता है और चोरों तथा झगड़ा करने वालों को पकड़कर थाने में बन्द कर देता है। सर्दी हो या गर्मी, बरसात हो

या अँधेरी रात, वह अपना काम करता रहता है।

गाँव में सिपाही का काम चौकीदार करता है। वह रात को पहरा देता है। गाँव में कोई चोरी हो जाये या झगड़ा हो जाये तो झट पुलिस थाने में खबर पहुँचाता है। चौकीदार भी अपना काम पूरी मेहनत से करता है।

* * *

'जैसा नाम वैसा काम'! ग्राम-सेवक का अर्थ है गाँव की सेवा करने वाला। ग्राम-सेवक गाँव वालों को घर और गाँव की सफाई, लोगों की सेहत और पशुओं की बीमारियों के बारे में बताता है। वह उन्हें खेती के नये और अच्छे औजारों के बारे में बताता है। खेतों की पैदावार बढ़ाने के नये-नये तरीके किसानों को सिखाता है। अच्छी नस्ल के पशुओं, अच्छे बीज और अच्छी खाद का प्रयोग करने की सलाह किसानों को देता है। गाँव के कुएँ-तालाब आदि

के पानी की सफाई का ध्यान रखता है। वह मक्खी और मच्छर से फैलने वाली बीमारियों के बारे में गाँव वालों को समझाता है। वह उन्हें चेचक और दूसरी छूत की बीमारियों का टीका लगवाने की सलाह देता है। बस, यह समझो कि गाँव वालों की हर कठिनाई में वह मदद करता है। गाँव वाले ग्राम-सेवक की बात मानते हैं। उसका आदर करते हैं।

कमला—पिताजी, हमें कभी अपने गाँव भी ले चलिये न! हम वहाँ कुछ दिन रहकर गाँव के बारे में जान लेंगे।

पिताजी—तुम्हारी बात तो ठीक है।

* * *

हाँ तो अब बस-कंडक्टर के काम के बारे में बात करेंगे।

हमें दिल्ली में जब कहीं एक जगह से दूसरी जगह जाना होता है, तो हम बस पर चढ़कर जाते हैं। इस तरह प्रतिदिन हजारों लोग

दिल्ली शहर में चलने वाली बसों में एक जगह से दूसरी जगह आते-जाते हैं। बस-कण्डक्टर उन्हें टिकट देता है और पैसे लेता है। वह मुसाफिर को उतारने के लिए बस को रोकता

है। वह किसी को बिना टिकट सफर नहीं करने देता। चलती बस पर चढ़ने और उतरने से लोगों को रोकता है। वह बस के पाँवदान पर किसी को खड़ा नहीं होने देता। वह बस में

किसी को सिगरेट-बीड़ी पीने से भी रोकता है।

वह सफर करने वालों के साथ बहुत अच्छा बरताव करता है। सफर करने वाले भी उसका आदर करते हैं।

* * *

कभी-कभी घरों और कारखानों में आग लग जाती है। अगर आग को बुझाने का जल्दी प्रबन्ध न किया जाये तो वह आस-पास के मकानों में फैल जाती है। हजारों-लाखों रुपयों का सामान जलकर राख हो जाता है। कई लोग आग की लपटों में घिरकर जल जाते हैं।

इस मुसीबत से हमें आग बुझाने वाले बचाते हैं। ज्योंही आग बुझाने के दफ्तर में खबर पहुँचती है, आग बुझाने वाले झट अपनी गाड़ियों को लेकर पहुँच जाते हैं। आग बुझाने वालों की गाड़ियों का रंग लाल होता है, यह तो शायद तुम जानते ही हो। वे सड़क

पर गाड़ियों को तेजी से दौड़ाते हुए ले जाते हैं। उनकी गाड़ियों में घंटे लगे हुए होते हैं। वे उन्हें जोर-जोर से बजाते चलते हैं ताकि दूसरी गाड़ियाँ और लोग उनके लिए रास्ता छोड़ दें। और आग बुझाने वाले लोहे के टोप पहने रहते हैं। वे अपनी गाड़ियों पर बड़े-बड़े ऊँचे मकानों तक पहुँचने वाली सीढ़ियाँ और आग पर पानी डालने के लिए मोटी-मोटी नलियाँ लादकर लाते हैं।

वे सीढ़ियों पर चढ़कर आग में घिरे हुए लोगों को बाहर निकाल लाते हैं। वे अपनी पानी की नलियों से आग पर तेजी से पानी डालते हैं और आग को बुझा देते हैं। उनका काम बड़ी हिम्मत और खतरे का है। वे अपनी जान को खतरे में डालकर दूसरों की जान बचाते हैं। वे अपना काम बड़ी फुर्ती से करते हैं।

ऐसे लोगों का हम जितना भी आदर करें, थोड़ा है।

अभ्यास

हमने सीखा—

१—अध्यापक, डाक्टर, सिपाही, चौकीदार, ग्राम सेवक, बस-कण्डक्टर और आग बुझाने वाले हमारी सहायता करते हैं।

२—(क) सिपाही चोरों से हमारी चीजों की रक्षा करता है।

(ख) चौराहे पर खड़ा होकर सवारियों को टकराने से बचाता है।

(ग) रात को मुहल्लों में पहरा देता है।

हमें चाहिए—

१—हमें समाज की सहायता करने वालों का मान करना चाहिए।

२—ऐसा कोई काम नहीं करना चाहिए, जिससे आग लगने का डर हो।

३—आग बुझाने वाली गाड़ियों के लिए रास्ता खाली कर देना चाहिए।

खेल-खेल में काम—

१—स्कूल में चोर और सिपाही का नाटक खेलो।

२. हमारी जरूरतें

पिताजी—अशोक, उस दिन हमने, कुछ ऐसे लोगों के बारे में बातचीत की थी, जो अपने कामों से लोगों की सहायता करते हैं। आज हम अपनी जरूरत की चीजों के बारे में बात करेंगे। कमला बेटी, सुन रही हो न!

कमला—जी पिताजी!

पिताजी—अच्छा बताओ, हम अपनी जरूरत की चीजें कहाँ से लाते हैं?

कमला—बाजार से।

पिताजी—ठीक! अच्छा अशोक, तुम यह बताओ कि कैसे लाते हैं?

अशोक—हम दूकानदार को चीज की

कीमत दे देते हैं और ले आते हैं !

पिताजी—और क्या यह भी बता सकते हो कि दूकानदार वे चीजें कहाँ से लाता है ?

अशोक—दूकानदार ! दूकानदार·····

पिताजी—सुनो, मैं तुम्हें बताता हूँ। हर एक चीज के बारे में तो नहीं बताया जा सकता। पर अगर तुम एक चीज़ के बारे में भी समझ लोगे तो तुम्हें बहुत-सी बातों का पता लग जायेगा। कपड़े को ही ले लें।

कपड़े के लिए कपास किसान ने पैदा की। किसान ने कपास मण्डी में ले जाकर बेच दी। वहाँ से बड़े-बड़े व्यापारियों ने खरीदी और कपड़े के कारखाने वालों को बेच दी।

कपड़ा कपड़ा बुनने वाले कारखानों में तैयार होता है। इन कारखानों में कपड़ा बुनने की बड़ी-बड़ी मशीनें होती हैं। एक-एक कारखाने में सैकड़ों-हजारों आदमी काम

करते हैं। वहाँ प्रतिदिन हजारों गज कपड़ा तैयार होता है।

उन कारखानों से बड़े-बड़े व्यापारी कपड़ा खरीद लेते हैं। उनसे देशभर के शहरों के व्यापारी कपड़ा खरीद कर ले जाते हैं। फिर शहर के दूकानदार अपने शहर के व्यापारियों से कपड़ा खरीद लाते हैं। हम बाजार में जाकर दूकानदार से खरीद लेते हैं।

हम कपड़ा खरीद कर उसे दर्जी के पास ले जाते हैं। दर्जी उसके कपड़े सी देता है। दर्जी को कपड़े सीने के लिए मशीन की जरूरत थी। उसके लिए मशीन किसी दूसरे कारखाने ने बनाई। इसी तरह कपड़े बुनने की मशीनें भी किसी दूसरे कारखाने ने बनाईं। किसान के लिए औजार लुहार ने बनाये।

इसी तरह हमारी जरूरत की लगभग सभी चीजें दूसरे लोग बनाते हैं। हम कीमत

देकर बाजार से वे चीजें खरीद लाते हैं। हम अपनी जरूरत की चीजें अपने आप नहीं बना सकते।

पर आज से हजारों साल पहले आज जैसी बात नहीं थी। तब आदमी की जरूरतें इतनी अधिक नहीं थीं। तब कारखाने भी नहीं

थे। दूकानें और बाजार भी नहीं थे। रुपया-पैसा भी नहीं था।

कमला—पिताजी, जब रुपया-पैसा नहीं था, तब लोग चीजें कैसे खरीदते थे? बच्चे किताबें, मिठाइयाँ और खिलौने कैसे खरीदते थे?

पिताजी—बेटी, मैंने बताया न कि तब बाजार भी नहीं थे, दूकानें भी नहीं थीं और किताबें भी नहीं थीं। खिलौने और मिठाइयाँ भी नहीं थीं।

अशोक—तो फिर क्या था?

पिताजी—बस, अनाज, बर्तन-भाँडे, थोड़ा-सा कपड़ा और गायें, भैंसें, बकरियाँ। वे खुद अनाज पैदा करते, गायें-भैंसें पालते, अपने लिए लकड़ी और मिट्टी के बर्तन बनाते और कपड़ा बुनते। न कोई कुछ खरीदता, न कोई कुछ बेचता।

अपनी जरूरत की सारी चीजें आप

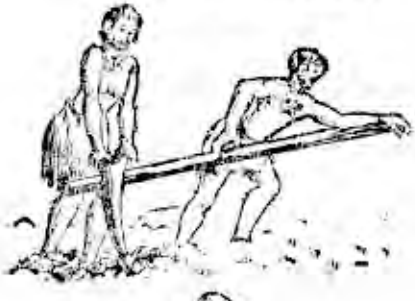

तैयार करने में उन्हें बड़ी कठिनाई होती। भला एक ही आदमी दुनिया भर के काम कैसे कर सकता है?

उन्होंने आपस में मिलकर रहने और मिलकर काम करने की बात सोची। वे इकट्ठे होकर, गिरोह बनाकर रहने लगे। यह बात सबको ठीक लगी।

कुछ लोग कुछ काम दूसरों से बढ़िया कर सकते थे। कोई अच्छा घर बना सकता था। कोई खेती-बाड़ी करने में कुशल था। कोई बर्तन अच्छे बनाता था। कोई बढ़िया कपड़ा बुन सकता था। कोई पशुओं को पालने में चतुर था।

लेकिन रुपया-पैसा तो तब था नहीं। लोग आपस में चीजों की अदला-बदली कर लेते। बर्तन बनाने वाला बर्तन देकर अनाज वाले से अनाज ले लेता, कपड़े वाले से कपड़ा। कुछ समय तक यही सिलसिला चलता रहा।

पर जरूरतें बढ़ती गईं; बढ़ती गईं और चीजों की अदला-बदली से काम चलना कठिन हो गया। तब समझदार लोगों ने सिक्के बनाये। और यह तय हुआ कि सिक्का देकर चाहे कोई-सी चीज खरीद ली जाये। और सिक्का लेकर कोई-सी बेच दी जाये।

कुछ लोगों ने एक नया काम शुरू किया। वे चीजें खरीद लेते। अनाज, कपड़ा, बर्तन, औजार और लोगों की जरूरत की सारी चीजें अपने पास जमा रखते। वे चीजें बनाने वालों से चीजें खरीद लाते और जिन्हें जरूरत होती उन्हें बेच देते। उन्होंने जो चीज जितने में खरीदी होती, उससे कुछ अधिक कीमत लेकर बेचते। ये दूकानदार थे। जिस जगह बहुत-सी दूकानें हों, उसे बाजार कहते हैं।

कमला—पिताजी, दिल्ली में तो कई बाजार हैं। क्या हमारे गाँव में भी बाजार है?

पिताजी—नहीं बेटी, गाँवों में बाजार नहीं होते। कई गाँवों में एक-दो दूकानें होती हैं। गाँव वालों की जरूरतें शहर वालों से कम होती हैं। वे अपनी जरूरत की चीजें उन दूकानों से खरीद लेते हैं। इनके अलावा

कई गाँवों में सप्ताह में एक बार हाट लगती है। ये दूकानदार बारी-बारी—आज इस गाँव में तो कल उस गाँव में जाकर दूकानें लगाते हैं। उसे हाट लगाना कहते हैं। गाँव के लोग सप्ताह में एक बार अपनी जरूरत की चीजें इन हाटों से खरीद लेते हैं। सप्ताह भर बाद फिर उसी गाँव में हाट लगाने की बारी आ जाती है।

पर बड़े कस्बों और शहरों में ऐसा नहीं होता। वहाँ पक्की दूकानें होती हैं और दिन भर खुली रहती हैं। वे सप्ताह में एक दिन छुट्टी रखते हैं।

इसके अलावा गाँवों में साल-छः महीने पीछे कोई न कोई मेला भी लगता है। मेले में बहुत-से दूकानदार तरह-तरह की चीजें बेचने के लिए लाते हैं। शहरों में बड़ी-बड़ी नुमाइशें लगती हैं। दिल्ली में तो कोई न कोई प्रदर्शिनी

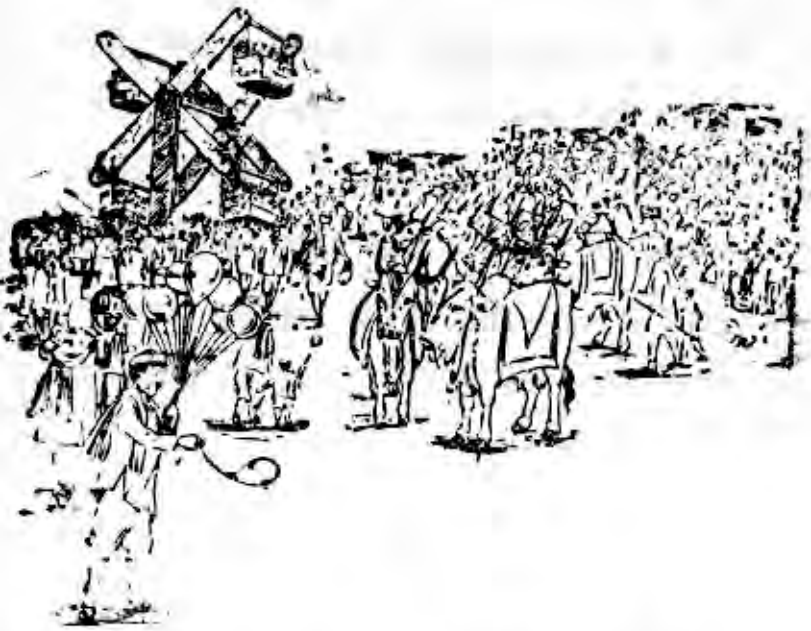

लगी ही रहती है। नुमाइशों में देश के कोने-कोने से दूकानदार बढ़िया-बढ़िया माल बेचने के लिए लाते हैं।

लोग अपनी जरूरत की चीजें उनसे खरीदते हैं। खरीदने वाले दूकानों और बाजारों में घूम-फिरकर चीजें देखते हैं और उनकी

कीमत पूछते हैं। जिस दूकान पर अच्छी और सस्ती चीज मिलती है, उससे खरीद लेते हैं।

अभ्यास

हमने सीखा—

१—हम अपनी जरूरत की चीजें खुद नहीं बना सकते। हमारी जरूरत की चीजें बहुत-से लोग बनाते हैं।

२—हम अपनी जरूरत की चीजें कीमत देकर बाजार से खरीदते हैं।

३—हमारी जरूरतें दिनों-दिन बढ़ती जा रही हैं। बहुत पहले आदमी की जरूरतें बहुत कम थीं।

हमें चाहिए—

१—हमें चाहिए कि हम अच्छी और सस्ती चीजें खरीदें।

२—बेकार की चीजों पर पैसे खर्च न करें।

३—पैसा बचाने की आदत डालें।

खेल-खेल में काम—

१—दूकानदार और ग्राहक का अभिनय करो।

२—अपनी जरूरत की चीजों की सूची बनाओ।

३—अपने घर वालों के साथ बाजार जाओ और देखो, लोग दूकानदार से कैसे मोल-तोल करते हैं।

३. यह चिट्ठी कहाँ से आई है ?

[डाकिया अभी-अभी चिट्ठी दे गया है। अशोक के पिताजी चिट्ठी पढ़ रहे हैं]

अशोक—पिताजी, यह चिट्ठी कहाँ से आई है ?

पिताजी—बेटा, यह चिट्ठी बम्बई से तेरे मामा ने भेजी है।

कमला—पिताजी, बम्बई तो यहाँ से बहुत दूर है न ?

पिताजी—हाँ बेटी। सैकड़ों मील दूर है।

कमला—इतनी दूर से यहाँ तक चिट्ठियां कैसे आती हैं ?

पिताजी—ज़रा ठहरो, यह चिट्ठी पढ़ लेने दो, फिर तुम्हें समझाता हूँ।

[चिट्ठी पढ़कर रख देते हैं]

हाँ, क्या कह रही थी, बम्बई से चिट्ठियाँ कौन लाता है ? हमारी गली के मोड़ पर जो बड़ा-सा लाल रंग का डिब्बा-सा रखा है न !

कमला—लैटर-बक्स !

अशोक—पिताजी, इस तरह के लैटर-बक्स तो कई जगह हैं।

पिताजी—हाँ बेटा, सारे शहर में इस तरह के कई लैटर-बक्स हैं। सभी शहरों में ऐसे लैटर-बक्स होते हैं। गाँवों में भी लैटर-बक्स रखा रहता है। अच्छा अशोक, पहले तुम यह बताओ कि कोई किसी को चिट्ठी क्यों लिखता है ?

अशोक—जब लोग बहुत दूर-दूर रहते हैं तो वे चिट्ठी लिखकर जो बात कहनी होती है, कहते हैं या पूछते हैं।

पिताजी—अच्छा कमला, तुम बताओ, चिट्ठी लिखने के बाद हम उसे क्या करते हैं ?

कमला—हम उसे लैटर-बक्स में डाल देते हैं।

पिताजी—ठीक है। अब मैं तुम्हें बताता हूँ कि इसके बाद क्या होता है। लैटर-बक्स पर एक काली पट्टी लगी रहती है। उस पर

POST OFFICE

लैटर-बक्स से चिट्ठियाँ निकालने का समय लिखा रहता है। पट्टी पर लिखे समय पर डाकखाने का कर्मचारी आकर लैटर-बक्स को खोलता है और सारी चिट्ठियाँ थैले में डाल-कर डाकखाने में ले जाता है। बड़े शहरों के छोटे-छोटे डाकखानों से ये सारी चिट्ठियाँ बड़े डाकखाने में जाती हैं। वहाँ इन पर डाकखाने की मोहर लगाई जाती है। इस मोहर में समय, तारीख, महीना, सन् और शहर का नाम लिखा होता है।

मोहर लगाने के बाद इन चिट्ठियों को शहरों के हिसाब से अलग-अलग थैलों में भरा जाता है। और थैले पर उस शहर के नाम की चिट लगाकर, उसे बन्द कर दिया जाता है।

अब इन थैलों को, रेलवे-स्टेशन पर पहुँचाया जाता है। वहाँ से रेलगाड़ियाँ इन्हें अलग-अलग शहरों में पहुँचा देती हैं। जहाँ

रेलवे स्टेशन नहीं होता, वहाँ मोटरें डाक के थैलों को पास के स्टेशन तक पहुँचा देती हैं। और स्टेशन से अपने कस्बे की डाक ले आती हैं।

छोटे-छोटे गाँव—जहाँ रेलें, मोटरें नहीं जातीं, डाकिया चिट्ठियों की थैली को उठाकर, पैदल चलकर, मोटरों और रेलों तक पहुँचाता है। और वहाँ से वापस आते समय अपने गाँव की डाक की थैली को ले आता है।

जब डाक के थैले अपने स्टेशन पर पहुँच जाते हैं तो वहाँ से उन्हें शहर के बड़े डाकखाने में पहुँचाया जाता है। फिर वहाँ उन्हें गली-मुहल्लों के अनुसार अलग-अलग छाँट लेते हैं। प्रत्येक डाकिया अपने मुहल्ले की डाक उठाता है और मुहल्ले में जाकर बाँटता है। गर्मी हो या बरसात, सर्दी हो या तूफान, डाकिया अपना काम नहीं छोड़ता।

वह एक-एक चिट्ठी पर लिखे पते को बड़े ध्यान से पढ़ता है और ठीक पते पर चिट्ठी देता है। बेचारा पैदल एक-एक घर में चिट्ठियाँ पहुँचाता है।

डाकखाना हमारी कितनी सेवा करता है। केवल छः नये पैसे का कार्ड डाकखाने से खरीदकर हम हजार मील दूर बैठे अपने सम्बन्धी या मित्र तक अपनी बात पहुँचा सकते हैं।

अभ्यास

हमने सीखा—

१—डाकखाने वाले रेलों-मोटरों द्वारा पत्रों को एक से दूसरी जगह पहुँचाते हैं।

२—डाकिया हमारी बहुत सेवा करता है।

हमें चाहिए—

१—हमें चिट्ठी पर पता साफ-साफ अक्षरों में लिखना चाहिए।

खेल-खेल में काम—

१—पाठशाला में डाकिये का अभिनय करो।

४. बाल-सभा

अशोक—पिताजी, हमारे स्कूल में इस मास के अन्तिम शनिवार को एक नाटक होगा। नाटक हमारे हिन्दी के अध्यापकजी ने तैयार

किया है। वह मुझसे भी नाटक में भाग लेने को कह रहे थे।

पिताजी—बेटा, यह तो बड़ी अच्छी बात है। तुम्हें पढ़ाई के अलावा खेलों और इस तरह के दूसरे कामों में भी भाग लेना चाहिए।

अशोक—पिताजी, हमारे स्कूल में हर शनिवार को बाल-सभा होती है। स्कूल के सभी विद्यार्थी उसमें भाग लेते हैं। जो विद्यार्थी उसमें भाग लेने में शर्माते हैं, अध्यापक उन्हें भी समझाकर तैयार कर लेते हैं। मैं कई बार अपनी पुस्तक की कविताएँ याद करके सुना चुका हूँ। हमारा एक साथी हमें बहुत बढ़िया-बढ़िया चुटकुले सुनाता है। उसके चुटकुले सुनकर सभी हँस पड़ते हैं। अध्यापक भी हँसने लगते हैं। पिताजी, वह इतने बढ़िया-बढ़िया चुटकुले कहाँ से सीखता होगा?

पिताजी—बेटा, बच्चों की कई पत्रिकाएँ प्रकाशित होती हैं। उनमें बच्चों के पढ़ने योग्य

कहानियाँ, कविताएँ, नाटक, चुटकुले और दूसरे कई तरह के जानकारी बढ़ाने वाले लेख होते हैं। इसके अलावा रविवार को दैनिक समाचार-पत्रों में भी बच्चों के लिए कविताएँ, चुटकुले, कहानियाँ, लेख आदि छपते हैं।

अशोक—पिताजी, मेरे लिए भी बच्चों की कोई पत्रिका मँगवाया करें न! मैं उसे जरूर पढ़ा करूँगा और रविवार को अपने समाचार-पत्रों में बच्चों वाला पन्ना होगा, वह भी मुझे अवश्य दिखलाइयेगा। मैं उसमें से गीत याद करके 'बाल-सभा' में सुनाऊँगा।

कमला—पिताजी, एक पत्रिका मेरे लिए भी। हमारे स्कूल में भी तो बाल-सभा होती है। पिछले शनिवार को बाल-सभा में दो लड़कियों में बड़ी मजेदार बहस हुई थी। वे पाँचवीं कक्षा की लड़कियाँ थी। बहस का विषय यह था कि लड़कियों के लिए खाना पकाना

सीखना ज्यादा जरूरी है या सीना-पिरोना।

अशोक—पिताजी, पहले-पहल जब मैं बाल-सभा में गीत गाने के लिए खड़ा हुआ, तो मुझे बड़ी झिझक लगी। पर अब तो मैं बहुत अच्छी तरह बोल लेता हूँ।

पिताजी—अच्छा, तुम्हारी बाल-सभा में और क्या-क्या होता है?

अशोक—बाल-सभा का कार्य-क्रम विद्यार्थी मिलकर बनाते हैं और उसे पूरा करते हैं। स्कूल की सफाई, विद्यार्थियों की अपनी सफाई और अध्यापकों की आज्ञा मानने के लिए बाल-सभा सभी विद्यार्थियों से कहती है। बाल-सभा में हम मिल-जुलकर काम करना सीखते हैं। गाना, नाटक खेलना और सभा में बोलना सीखते हैं। बाल-सभा हमारी अपनी सभा है और उसमें हम अपने बारे में आप ही सोच-विचार करते हैं। हाँ, जहाँ कहीं

जरूरत पड़ती है, अध्यापक हमें काम करने में सहायता करते हैं।

बाल-सभा खेलों का कार्य-क्रम भी बनाती है और उसमें खेलों के मुकाबले होते हैं। इसमें दौड़, कबड्डी आदि खेल होते हैं।

बाल-सभा ठीक समय पर पाठशाला आने, साथियों से प्रेम का वर्ताव करने और घर का काम करके आने की सलाह भी देती है। पिताजी, ये कितनी अच्छी बातें हैं।

कमला—हमारे स्कूल में बाल-सभा में एक लड़की ने बहुत ही अच्छा नाच किया था। पिताजी मेरे लिए भी घुँघरू ला दें। मैं भी पैरों मे घुँघरू बाँधकर नाच करूँगी।

अशोक—पिताजी, हमारी बाल-सभा का एक मंत्री है और एक प्रधान। मंत्री एक रजिस्टर में बाल-सभा की कार्यवाही लिख लेता है। प्रधान और मंत्री मिलकर एक सप्ताह

पहले ही बाल-सभा का प्रोग्राम बना लेते हैं और सबको बता देते हैं, इस तरह लोगों को तैयारी करने का मौका मिल जाता है।

हम मिलकर पढ़ते हैं, मिलकर खेलते हैं और मिलकर बाल-सभा में काम करते हैं।

अभ्यास

हमने सीखा—

१—बाल-सभा छात्रों की सभा है। उसके मंत्री और प्रधान को छात्र ही चुनते हैं।

२—पढ़ाई के साथ-साथ हम मिल-जुलकर काम करना भी सीखते हैं।

हमें चाहिए—

१—हमें बाल-सभा के कामों में भाग लेना चाहिए।

१. मुझे जल्दी पहुँचना है

अशोक—मामाजी, आप कितने बजे की गाड़ी से जायेंगे ?

अशोक का मामा—अशोक, मैं गाड़ी से नहीं, हवाई जहाज से जाऊँगा ।

कमला—मामाजी, आप गाड़ी से क्यों नहीं चले जाते ?

अशोक का मामा—मुझे जल्दी पहुँचना है । हवाई जहाज तीन घंटे में पहुँचा देगा । और गाड़ी पर जाऊँगा तो कम से कम चौबीस घंटे लगेंगे ।

अशोक—मामाजी, अगर यह बात है तो फिर लोग गाड़ी से क्यों जाते हैं ?

अशोक का मामा—गाड़ी में कम किराया लगता है। हवाई जहाज में ज्यादा लगता है।

कमला—आपको बहुत जरूरी काम है क्या, मामाजी ?

अशोक का मामा—हाँ बेटी, तभी तो मैं ज्यादा पैसे खर्च कर हवाई जहाज से जा रहा हूँ। एक बात और भी है। गाड़ी के लम्बे सफर में आदमी बैठे-बैठे भी थक जाता है। हवाई जहाज का सफर तीन घंटे का है। सुबह चलकर दस बजे बम्बई पहुँच जाऊँगा। यहाँ से सुबह नहा-धोकर चलूँगा और खाना घर पहुँचकर खाऊँगा। थकावट नहीं होगी, इस लिए दिन भर दफ्तर के काम भी कर सकूँगा।

कमला—पिताजी, आज हमें सवारियों के बारे में समझाइये।

पिताजी—अच्छा, लो सुनो; यह तो तुम जानते ही हो कि लोगों को गाँव या शहर से

रहती है। वह तेज चलती है। रेलें समय पर चलती हैं और समय पर पहुँचती हैं।

रेलों में पेशाब करने और पखाना जाने का भी प्रबन्ध होता है। पानी भी होता है। कुछ ज्यादा रुपये देकर रात को सोने जगह भी मिल जाती है। रेलें रात में भी चलती रहती हैं। स्टेशनों पर खाने-पीने की सभी चीजें मिल जाती हैं।

अगर किसी को बहुत ही जल्दी हो, जैसी तेरे मामा को है तो हवाई जहाज से सफर करना चाहिए। हवाई जहाज एक घंटे में तीन सौ मील तक सफर तय कर लेता है।

यह तो हुई आजकल की सवारियों की बात। अब पुराने जमाने की सवारियों की बात सुनो—

बहुत पुराने जमाने में कोई सवारी थी ही नहीं। लोग पैदल ही आते-जाते थे। बाद में

जब उन्होंने जानवर पाल लिये तो उनकी पीठ पर बैठकर सफर करने लगे। वे अपना सामान भी जानवरों की पीठ पर लाद लेते थे। इसके बाद उन्होंने नावें बनाना सीख लिया और नावों में बैठकर और सामान लादकर नदियों में नावें खेकर ले जाने लगे। नावों में बैठकर ही नदियाँ पार करने लगे। जब उन्हें यह बात मालूम हो गई कि पहिया आसानी से, बिना ज्यादा जोर लगाये, घूम जाता है तो उन्होंने पहियों वाली गाड़ी बना ली। हजारों साल यह ठेलागाड़ी और रथ में काम आते रहे।

पर उस ठेलागाड़ी पर बैठकर न तो कोई सैकड़ों-हजारों मील का सफर कर सकता था, न वह तेजी से दौड़ सकती थी। और उस जमाने में अच्छी सड़कें भी तो नहीं थीं। रास्ते में कहीं बीहड़ जंगल पड़ते थे और कहीं रेगिस्तान। कहीं जंगली जानवरों का डर था।

और कहीं मीलों तक एक बूँद पानी नहीं मिलता। चोरों-डाकुओं का डर अलग। कहीं गाड़ी खींचने वाले जानवर बीमार हो जाते, चलते-चलते बुरी तरह थक जाते और मर भी जाते तो कठिनाई होती।

आखिर आज से कोई डेढ़ सौ वर्ष पहले लोगों ने भाप और तेल से चलने वाली गाड़ियाँ बनाईं। भाप से उसने रेलगाड़ी और छोटे-बड़े पानी के जहाज चलाये। तेल के इंजन से मोटर गाड़ियाँ चलाईं।

इन गाड़ियों के लिए उसने रेल की पटरी बिछाई और पक्की सड़कें बनाईं। अब वह मजे से और जल्दी-जल्दी सफर करने लगा।

पर उसे ये गाड़ियाँ भी खुश न कर सकीं। उसने इनसे भी तेज चलने वाली कोई सवारी बनाने का विचार किया। और आज

से कोई पचास वर्ष पूर्व उसने हवाई जहाज बना डाला। आदमी ने आकाश में उड़ने में सफलता पाई। अब वह एक घंटे में सैकड़ों मील सफर तय कर सकता है।

हमारा समय बड़ा कीमती है। उसे बेकार नहीं गँवाया जा सकता। ये तेज सवारियाँ हमारे समय की बचत करती हैं और हमें आराम भी देती हैं।

अभ्यास

हमने सीखा—

१—हवाई जहाज सबसे तेज चलने वाली सवारी है।

२—पुराने जमाने में लोगों को सफर करने में बड़ी कठिनाई होती थी।

हमें चाहिए—

१—टिकट लेते समय, गाड़ी पर चढ़ते समय लाइन लगायें।

२—सवारी करते समय गाड़ियों को गन्दा न करें।

खेल-खेल में काम —

१—कागज का हवाई जहाज बनाओ और उसे उड़ाओ।

२—'पहिया' (गोल चक्कर) गाड़ी के सिवा और किस-किस चीज में लगाया जाता है, सूची बनाओ।

३—सवारियों के चित्र अपनी एलबम में लगाओ।

४—तुम जितनी सवारियों के नाम जानते हो, उनकी सूची बनाओ।

२. सावधान ! यह सड़क है

अशोक—पिताजी, आज हमारे एक साथी रमेश को चोट लग गई।

पिताजी—क्या किसी से झगड़ा हो गया था ?

अशोक—जी नहीं, साइकल से टक्कर लग गई थी। बात यों हुई कि हम सड़क के किनारे मैदान में गेंद से खेल रहे थे। गेंद उछल कर सड़क पर जा पड़ी। रमेश गेंद के पीछे दौड़ा। उधर से साइकल आ रही थी। दोनों की टक्कर हो गई। रमेश के सिर में चोट लगी। खून बहने लगा। वहाँ कई लोग इकट्ठे हो गए। सभी कहने लगे, इस लड़के

की गलती है। यह बिना देखे-भाले गेंद के पीछे सड़क पर क्यों दौड़ आया? फिर उसे डाक्टर के पास ले गए। डाक्टर ने दवाई लगाकर पट्टी बाँध दी। तब खून बहना बन्द हुआ।

पिताजी—अशोक, ज़रा सोचो कि अगर साइकल के बदले कोई मोटर होती तो क्या होता? इसलिए हमें छोटी से छोटी बात का भी पूरा ध्यान रखना चाहिए।

कमला—पिताजी, बहिनजी ने हमें समझाया है कि सदा अपनी बाईं ओर चलना चाहिए। और जहाँ पैदल चलने वालों के लिए पटरी हो, वहाँ पटरी पर ही चलना चाहिए।

पिताजी—उन्होंने तुम्हें बड़ी अच्छी बात समझाई है। आज मैं तुम्हें सड़क पर चलने के नियम समझता हूँ। इन नियमों का पालन करने से हमें तो लाभ होता ही है, दूसरे को भी

सुविधा होती है। किसी सवारी के नीचे दब-कर कुचलने का डर नहीं रहता। अब तुम दोनों इन नियमों को ध्यान से सुन लो। बाद में इन्हें अपनी कापी पर लिख लेना।

सबसे पहला नियम यह है :—

१—हमेशा अपनी बाईं ओर चलो।

२—पैदल चलने वालों को पटरी पर चलना चाहिए।

३—चलते समय सीधे सामने देखो।

४—चलते समय दूकानों पर लगे नाम के बोर्डों, दीवारों पर लगे इश्तहारों को मत पढ़ो। बाजार में चलते-चलते इधर-उधर मत देखो।

५—सड़क पर चलते समय सोच में मत डूबे रहो। न चलते-चलते कुछ खाओ ही।

६—सड़क पर खेलो मत। सड़क के किनारे खेलते समय यदि गेंद सड़क पर जा गिरे तो उसके पीछे मत भागो।

७—सड़क पार करते समय ज़रा रुको, अपनी दाहिनी ओर देखो कि कोई सवारी तो नहीं आ रही है। फिर बाईं ओर देखो, उस तरफ से तो कोई सवारी नहीं आ रही है। अब एक बार फिर दाहिनी ओर देख लो। अगर सड़क खाली है तो जल्दी से पार कर लो।

८—चौराहा पार करना हो तो सड़क के

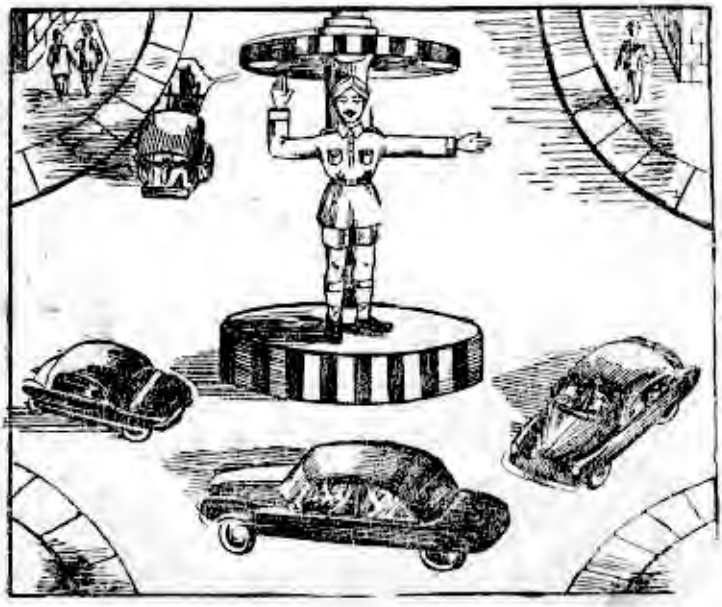

किनारे खड़े हो जाओ। जब सिपाही हाथ का इशारा करे तभी पार करो। कई चौराहों पर सड़क पार करने के लिए सफेद लकीरें लगी रहती हैं। वहीं से सड़क पार करो। इधर-उधर से नहीं।

९—कई बड़े-बड़े चौराहों पर अब सिपाही खड़ा नहीं होता। इन चौराहों पर बिजली की लाल, संतरी और हरी बत्तियाँ लगा दी गई हैं।

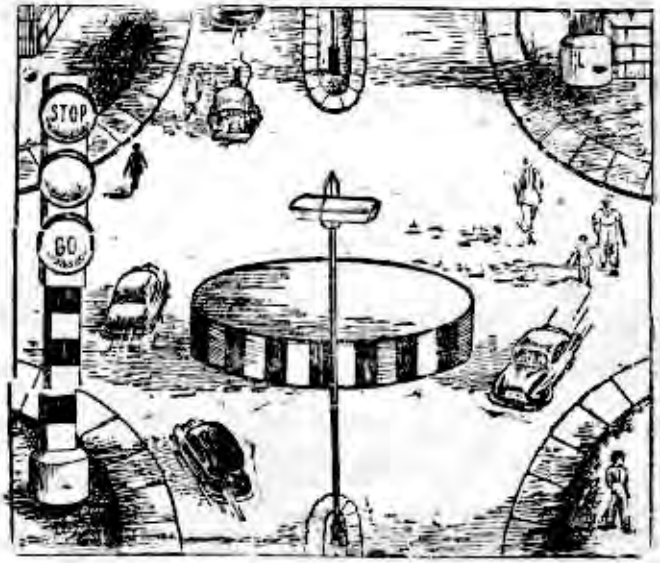

अगर सामने लाल बत्ती हो तो इसका मतलब है—रुको, अभी सड़क खाली नहीं है !

इसके बाद सन्तरी रंग की बत्ती जलेगी उसका मतलब है, तैयार हो जाओ, हरी बत्ती जलने वाली है।

अब हरी बत्ती जलेगी। इसका मतलब है, सड़क साफ है। जा सकते हो।

हरी के बाद जब संतरी रंग वाली बत्ती जले तो उसका मतलब है—बस, अब रुक जाओ। लाल बत्ती जलने वाली है।

१०—अगर साइकल पर जाना हो तो (क) अपनी साइकल में घंटी जरूर लगाओ। (ख) रात को बिना बत्ती के साइकल मत चलाओ। (ग) साइकल पर कभी दो मत चढ़ो। (घ) कई सड़कों पर एक तरफ से ही सवारियाँ जा सकती हैं। उन सड़कों पर दूसरी ओर से साइकल पर चढ़कर मत चलो। (ङ) कहीं-कहीं

साइकल वालों के लिए अलग पटरी बनी हुइ है। वहाँ पटरी पर ही चलो।

११—जब बस में बैठें तो:—(क) खिड़कियों से बाहर नहीं झाँकना चाहिए। अपनी बाँह भी बाहर नहीं निकालनी चाहिए। (ख) कभी चलती बस पर चढ़ना नहीं चाहिए। और न ही चलती बस से उतरना चाहिए। (ग) बस के फुटपाथ पर कभी खड़े नहीं होना चाहिए। ऐसा करने से गिरने का डर रहता है। ये सारे नियम हमारे ही लाभ के लिए हैं। हमें कभी इन नियमों को नहीं तोड़ना चाहिए।

अभ्यास

हमने सीखा—

१—सड़क पर चलने के नियमों का पालन करने से हमें ही लाभ होता है।

२—हमें छोटी-छोटी बातों का भी पूरा ध्यान रखना चाहिए।

हमें चाहिए—

१—हम सड़क पर चलने के नियमों का पूरी तरह पालन करें।

२—सड़क के किनारे पैदल चलने वालों और सवारियों के लिए बोर्डों पर कई बातें लिखी रहती हैं। उन्हें पढ़कर उन पर अमल करना चाहिए।

खेल-खेल में काम—

१—स्कूल के मैदान में चौक पर खड़े पुलिस के सिपाही और यात्रियों का अभिनय करो।

२—बचकर चलना, बचकर चलना, प्यारे बच्चो, बचकर चलना।—यह कविता तुम्हारे अध्यापक जो तुम्हें सिखायेंगे। इसे मिलकर गाओ।

(क) गाँव और शहर

रमेश—(अशोक के माता-पिता को हाथ जोड़कर) नमस्ते जी, क्या अशोक घर पर है?

(इतने में अशोक और कमला आते हैं)

अशोक—रमेश जी, नमस्ते !

रमेश—नमस्ते भाई ! कब आये ?

अशोक—बस, आज सवेरे ही पहुँचा हूँ।

रमेश—भाई अशोक, मैंने तो कभी गाँव देखा नहीं। अब ये तुम देख आए हो तो मुझे भी बताओ कि गाँव कैसा होता है ?

अशोक—भाई रमेश, मुझे तो गाँव बड़ा अच्छा लगा। एक तो गाँव में शहर-जैसी भीड़-भाड़ नहीं होती। हमारे गाँव में लगभग

सौ घर होंगे। गाँव के घर भी शहर-जैसे नहीं होते। बहुत-से घर तो छोटे-छोटे और कच्चे होते हैं। कुछ लोगों के घर पक्के भी हैं।

गाँवों में शहरों की तरह नल नहीं होते। हमारे गाँव में तीन कुएँ हैं। वहीं से लोग पानी लेते हैं। कई गाँवों में तालाब या झरने होते हैं। या नदी होती है। इनमें से जहाँ जो कुछ होता है, उसी से लोग पानी लेते हैं। नदी के किनारे, गाँव के पास मिट्टी का बाँध बना दिया गया है। इससे बरसात में नदी का पानी गाँव में नहीं आ सकता।

गाँव के चारों ओर हरे-भरे खेत हैं। आजकल खेतों में गेहूँ की फसल खड़ी है। गाँव के लोग अधिकतर खेती-बाड़ी करते हैं। गाँव के शहर मैदान में गाँव भर की गायें-भैंसें, बैल और बकरियाँ चरती हैं। पास ही एक छोटा-सा जंगल है। गाँव की सड़कें कच्ची होती हैं।

गाँवों की सड़कें और पगडंडियाँ खेतों में से होकर जाती हैं। वे एक गाँव को दूसरे गाँव से मिलाती हैं। गाँव में मन्दिर और मस्जिद भी होते हैं। हमारे गाँव में एक प्राइमरी स्कूल भी है। हमारे गाँव के पास ही एक और बड़ा गाँव है। वहाँ डाकखाना, अस्पताल, पंचायत-घर और कुछ दूकानें भी हैं।

एक दिन गाँव में कुछ लड़के हमारे घर इकट्ठे हो गए। उन्होंने अभी तक कोई शहर नहीं देखा है। वे कहने लगे—

अशोक भाई! हमने अभी तक कोई शहर नहीं देखा है। हमने सुना है कि दिल्ली बहुत बड़ा शहर है। हमें शहर के बारे में कुछ बताओ।

अशोक के पिता—तो फिर तुमने उन्हें शहर के बारे में क्या-क्या बताया?

अशोक—मैंने उन्हें बताया :

दिल्ली बहुत बड़ा शहर है। वहाँ लाखों लोग रहते हैं। शहर के सारे मकान पक्के हैं। और कई तो तीन-तीन, चार-चार मंजिल ऊँचे हैं। दिल्ली में एक दो नहीं, सैकड़ों छोटे-बड़े बाजार हैं। सारी सड़कें पक्की हैं। सड़कों और बाजारों में भीड़ इतनी होती है कि कन्धे से कन्धा टकराता है। सड़कों और गलियों में रात को बिजली की बत्तियाँ जलती रहती हैं। दिल्ली में तांगा, मोटररिक्शा, स्कूटर, टैक्सी, बसें और रेलगाड़ी चलती हैं। घर-घर में पानी के नल लगे हुए हैं। बड़े मुहल्लों में स्कूल, डाकखाना, अस्पताल और थाना होता है। बच्चों के खेलने के लिए मैदान हैं। घूमने के लिए पार्क हैं। मन्दिर, मस्जिद, गिरजाघर और गुरुद्वारे हैं।

रेलवे-स्टेशन हैं। बसों के अड्डे हैं। कई

सिनेमाघर हैं, जहाँ रोज हजारों लोग जाकर खेल-तमाशा देखते हैं। कई तरह के कारखाने हैं। दिल्ली में सैकड़ों सरकारी और निजी दफ्तर हैं। उनमें हजारों लोग काम करते हैं।

दिल्ली में लालकिला, कुतुबमीनार, गुरुद्वारा शीशगंज राजघाट और चिड़ियाघर आदि कई देखने योग्य स्थान हैं।

रमेश—और तुमने यह नहीं बताया कि हमारे राष्ट्रपति और प्रधान मन्त्री भी दिल्ली में ही रहते हैं ?

अशोक—यह बताना तो मैं भूल ही गया। वहाँ कई लड़के मेरे दोस्त बन गये हैं। हम आपस में चिट्ठी लिखा करेंगे। मैं अपना पता उन्हें बता आया हूँ और उनका पता लिख लाया हूँ।

* * *

(ख) हजारों साल पहले

पिताजी—शाबाश, तुमने तीन दिन गाँव में रहकर ही वहाँ की अच्छी जानकारी प्राप्त कर ली और दिल्ली के बारे में तुमने गाँव के लड़कों को जो कुछ बताया, उसमें भी मोटी-मोटी सारी बातें बता दीं। लेकिन क्या तुम जानते हो कि गाँव और शहर बने कैसे ? मैं तुम्हें समझाता हूँ।

कमला—पिताजी, एक बार आपने बताया था कि पुराने जमाने में लोग जंगलों में रहते थे।

पिताजी—हाँ बेटी ! यही बात थी। वे जंगलों में रहते थे। जब उन्होंने खेती-बाड़ी करना सीख लिया और पशु पालने लगे, तो उन्हें घर बना कर रहने की जरूरत पड़ी। उन्होंने आपस में काम भी बाँट लिये। उनमें

से कोई बर्तन बनाने लगा। कोई खेती के औजार। कोई खेती-बाड़ी करने लगा तो कोई कपड़ा बुनने लगा।

उन्होंने जंगल काट डाले। खेती के योग्य जमीन तैयार कर ली और घर बनाकर रहने लगे। यही लोग बढ़ते गए, बढ़ते गए। एक घर से पाँच घर हुए। पाँच से दस और दस से बीस, तीस, पचास। इस तरह बढ़ते गए। जब एक जगह बहुत से लोग हो जाते और वहाँ उन्हें चीजों की तंगी होने लगती तो कुछ लोग वहाँ से दूसरी जगह जाकर बस जाते। इसी तरह बढ़ते-बढ़ते सैकड़ों-हजारों गाँव बन गए।

गाँवों में तरह-तरह की चीजें बनती थीं। कई गाँवों के कारीगर मिलकर एक दिन और एक जगह निश्चित कर लेते। फिर वे अपना-अपना बनाया हुआ माल लेकर उस दिन उस

जगह बेचने पहुँच जाते। खरीदने वाले इन चलते-फिरते बाजारों से अपनी जरूरत की चीजें खरीद लेते। धीरे-धीरे ऐसे बाजार प्रति दिन लगने लगे। इन बाजारों में बाहर के व्यापारी और ग्राहक आने लगे। कारीगर और व्यापारी यहीं आकर रहने लगे। बाद में ये बाजार ही नगरों के रूप में बदल गए।

गाँव और नगर में बड़ा भेद तो यही है कि थोड़े से घर जहाँ हों, वह गाँव और जहाँ कुछ ज्यादा हों वह कस्बा। कस्बे से बड़ा शहर। बस, इसी तरह छोटे-बड़े शहर बन गए।

किसी गाँव, मन्दिर, तालाब, हवेली, बाजार, गली और मेले का जो नाम होता है, उसका अपना इतिहास होता है, अपनी कहानी होती है। बड़े-बूढ़े इस तरह की मनोरंजक कहानियाँ बड़े चाव से सुनते हैं।

मेरे विचार में तुम गाँवों और शहरों के बनने की कहानी अच्छी तरह समझ गए हो।

दिल्ली में महरौली के पास कुतुबमीनार है। शायद तुमने देखी भी हो। कुछ लोगों का कहना है कि यह मीनार कुतबुद्दीन नामक एक बादशाह ने बनवाई थी। इसलिए उस बादशाह के नाम पर इसका नाम कुतुबमीनार पड़ा।

इसी तरह चाँदनी चौक में फव्वारे के पास शीशगंज गुरुद्वारा है। इस स्थान पर गुरु तेगबहादुरजी का बलिदान हुआ था।

राजघाट तुमने देखा होगा। वहाँ बापू जी की समाधि है। बापूजी ने भारत को आजाद कराया था। इस स्थान पर बापू का अन्तिम संस्कार हुआ था!

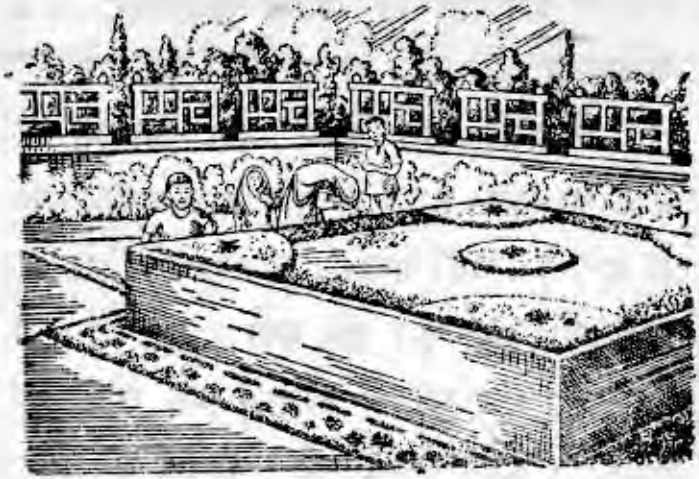

इसी तरह अनेक स्थानों के नाम के साथ कोई न कोई कहानी जुड़ी होती है।

(ग) गाँव और शहर : एक दूसरे के सहारे

अशोक—पिताजी, आज कई दूध वालों की दूकानें बन्द हैं। क्यों बन्द हैं पिताजी ?

कमला—मैं आज दूध लेने गई तो एक

आदमी कह रहा था, आज अमावस्या है। अमावस्या को गाँवों से दूध नहीं आता है।

पिताजी—हाँ बेटी, उस आदमी ने ठीक ही कहा। बहुत से गाँव वाले अमावस्या के दिन दूध नहीं बेचते। जब दूधिये दूध न लायें तो दूकानदार बेचें क्या! यह तो एक चीज हुई। शहरों में अनाज भी गाँवों से आता है और सब्जी भी। कपास भी और ऊन भी। लकड़ी और लकड़ी का कोयला भी। फल भी गाँवों से ही आते हैं और पशु के लिए चारा भी। अगर ये चीजें गाँवों से आनी बन्द हो जायें तो शहर वालों का जीना कठिन हो जाये।

अशोक—तब तो शहर के लोग गाँव वालों के सहारे ही जीते हैं।

पिताजी—हाँ, यह तो ठीक ही है। पर गाँव वालों की बहुत-सी जरूरतें शहर वाले

पूरी करते हैं।

शहर से कपड़ा, चीनी, खेती के औजार दवाइयाँ और किताबें गाँवों को जाती हैं। भाँडे-बर्तन भी शहरों से जाते हैं। ऐसी सैकड़ों चीजें हैं जो शहरों के कारखानों में तैयार हो कर गाँवों में जाती हैं।

सच तो यह है कि दोनों एक-दूसरे के सहारे चल रहे हैं। शहर वालों को गाँव वालों की जरूरत है और गाँव वालों को शहर वालों की।

अभ्यास

हमने सीखा—

१—गाँव के लोगों का जीवन कैसा होता है ?

२—शहरों में लोगों का जीवन कैसा होता है ?

३—शहरों और गाँवों को एक-दूसरे के सहारे की जरूरत होती है।

४—गाँव और शहर में क्या अन्तर है ?

हमें चाहिए—

१—हम गाँव के किसानों को आदर से देखें।

२—शहरों के कारीगरों का मान करें।

खेल-खेल में काम—

१—एक लड़का 'शहर' बने और एक 'गाँव'। दोनों में कौन बड़ा है—इस विषय पर वादविवाद करें।